फ़ैसला

आपका

प्रस्तुति: अब्दुल्लाह

بسم الله الرحمن الرحيم

(शुरू अल्लाह के नाम से जो अत्यंत करुणामय और दयावान हैं|)

इस किताब के बीच अगर मैं आपका दिल दुखाऊ तो आप मुझे मुआफ़ कर देना| मेरा मक़सद किसी का दिल दुखाना नही ह बस सछ्ई को आपके सामने लाना हैं|

ईश्वर के सच्चे संदेश को आप तक पहुँचने के लिए ये किताब लिख रहा हूँ|

कहते हैं कि हम इंसान एक ही माँ बाप कि संतान हैं यानी हज़रत आदम(आदम) और अम्मा हाव्वा(ईव) कि संतान हैं| और हम सब को मिट्टी और गारे से बनाने वाला एक ही खुदा हैं|

तो फिर धर्म इतने सारे क्यूँ हैं? इस किताब को पढ़िए फिर फ़ैसला करिये क्या सही है?

फ़ैसला आपका

सबसे पहले हमे ये जानना चाहिए कि धर्म का मतलब क्या हैं?

धर्म का मतलब हैं.. खुदा के कहने के अनुसारज़िंदगी गुज़ारना |

अब जानते हैं इस्लाम धर्म के बारे मैं..

इस्लाम बनता हैं "सल्म" शब्द से. सल्म का मतलब हैं शांति ओर अम्न (पीस)| और इस्लाम का मतलब हैं "खुद को अल्लाह के आदेश के लिए सामर्पण कर देना".

और मुस्लिम उसे कहते हैं जो अल्लाह के हुक्म के अनुसार अपनी ज़िंदगी को बिताते हैं|

अब जानते हैं हिंदु धर्म के बारे मैं..

असलियत तो ये हैं कि हिंदु नाम का कोई धर्म हैं ही नही, हिंदु जो शब्द हैं वो सबसे पहले फ़ारसी लोगो के द्वारा इस्तेमाल किया गया था जब वो हिन्दुस्तान में आए थे| उन्होने ये हिंदु शब्द इस्तेमाल किया था उन लोगो के लिए जो हिन्दुस्तान में रहते है| यानी हिन्दुस्तान में रहने वाले लोगों को कहते हैं हिंदु|

और हिंदु धर्म में जितनी भी धार्मिक किताबे हैं| जेसे-: रामायण, महाभारत, भागवत गीता, उपनिषद्, वेद, मनुस्मृति, पुराण इत्यादि|

आप इनमे से कोई भी किताब उठा कर देख लीजिए किसी भी किताब में आपको हिंदु शब्द मिलेगा ही नही| तब आपको पता लगेगा कि हिंदु धर्म का असली नाम "**सनातन धर्म**" है| आर्य समाज कि स्थापना करने वाले स्वामी दयानंद सरस्वती ने कहा है- हिंदु धर्म कोई धर्म ही नही हैं असली धर्म हैं "सनातन धर्म"|

और अगर आप सनातन धर्म को अरबी में लिखेंगे तो वो 100% इस्लाम बनेगा ||

अल्लाह(ईश्वर) ने धर्म तो शुरू से एक ही बनाया है| और हर धर्म में अल्लाह(ईश्वर) ने एक ही संदेश दिया है| चाहे वो इस्लाम हो, ईसाइयत हो, सनातन धर्म हो. यहूदी धर्म हो या दुनिया का कोई भी धर्म हो|

वो संदेश ये हैं कि. वो(अल्लाह,ईश्वर) सिर्फ़ और सिर्फ़ एक हैं और पूजा(इबादत) सिर्फ़ उसी कि करो. वोही हैं जो पूजा करने के लायक है और ईश्वर के अंतिम ऋषि(रसूल) मुहम्मद(स.)हैं|

ये सब हम आगे इस किताब में पढ़ेंगे|

सबसे पहले ये जाने कि इस्लाम कि तालीम क्या हैं?

इस्लाम कि नीव पहला कलिमा- कलिमा-ए-तय्यब है| यही कलिमा इस्लाम में प्रवेश होने का दरवाज़ा हैं|

कलिमा-ए-तय्यब ये है-

“ला इलहा इल्लाल्लाह मुहम्मदुर -रसूल अल्लाह”

अर्थ: “अल्लाह(ईश्वर) के सिवा कोई माबूद(पूजा करने के लायक) नही, और मुहम्मद(स.) अल्लाह के रसूल(सन्देश्ता) हैं”|

इस कालिमे के 2 भाग हैं|

1- अल्लाह(ईश्वर) के सिवा कोई मा’बूद(पूजा करने क लायक) नही.

2- और मुहम्मद(स.) अल्लाह के रसूल(सन्देश्ता) हैं”.

रसूल(इषदूत) का मतलब हैं वो इंसान जो ईश्वर का संदेश हम लोगो तक लाते हैं, यानी मुहम्मद (स.)ईश्वर का संदेश हम लोगो तक पहुँचने वाले ईश्वर के बंदे(भक्त) हैं|

अब हम इन दोनो भागो को अलग अलग पढ़ेंगे कि सनातन धर्म इन दो भाग और इस कालिमे के बारे मे क्या कहता हैं? और हिंदु धर्म कि किताब अल्लाह(ईश्वर) और उसके अंतिम रसूल(सन्देश्ता) के बारे में क्या कहती हैं?

अल्लाह(ईश्वर)

हिंदु धर्म में बहुत सी किताब हैं.

जेसे-: रामायण, महाभारत, भागवत गीता, उपनिषद्, वेद, मनुस्मृति,पुराण इत्यादि| हिंदु विद्वानो का मानना हैं कि वेद और पुराण ईश्वर के शब्द हैं और हिंदु धर्म में वेद सबसे ज़्यादा पवित्र हैं| और उनही विद्वानो का कहना ये हैं कि यही वेद हिंदु धर्म कि नीव हैं| इसका मतलब ये हुआ के जो कुछ वेदो और पुराण में लिखा हैं वो सच्च हैं|

वेद भी 4 प्रकार के हैं-

1- ऋग्वेद
2- साम वेद
3- यजुर वेद
4- अथरवा वेद

वेदो में ईश्वर के बहुत नाम हैं इनमे से कुछ ये हैं.

अल्लाह- ईश्वर, परमेश्वर, निराकार, अजन्मा, ब्रह्मा, विष्णु,परामशक्तिमान इत्यादि

यहाँ पर मेने **ब्रह्मा** शब्द का प्रयोग किया हैं तो कई हिंदु के दिमाग़ में भगवान ब्रह्मा कि तस्वीर आ गयी होगी के ब्रह्मा भगवान ही ईश्वर हैं पर ऐसा नही हैं..सबसे पहले आपको ये बताता चलूं कि हिंदु धर्म में लगभग **33,00,00,000(33 करोड़)** भगवान ओर देवी देवता हैं| और इनमे से किसी एक भी भगवान का नाम वेदो में नही आया, अब आप कहेंगे के ब्रह्मा भी तो भगवान हैं उनका नाम तो वेदो में आया हैं|

नही!! ब्रह्मा नाम जो वेदो में आया हैं वो भगवान ब्रह्मा के लिए नही आया.. क्युकि अगर वो भगवान ब्रह्मा के लिए होता तो वेदो में ये भी लिखा होता कि ब्रह्मा वो हैं जिनके चार मुख और सिर हैं और चारो सिर पर एक एक ताज हैं| लेकिन वेदो में ब्रह्मा के बारे में ऐसा कुछ नही कहा गया हैं|

ब्रह्मा का अर्थ होता हैं बनाने वाला | यानी वेदो में जो ब्रह्मा कहा गया हैं वो ईश्वर ने अपने आप को कहा हैं कि इस आकाश और ज़मीन को बनाने वाला "मैं" ही हूँ. और इन् दोनो के बीच में जितनी भी चीज़ हैं उन सब का भी बनाने वाला "मैं" ही हूँ.

अगर हम ब्रह्मा को अँग्रेज़ी में कहेंगे तो कहेंगे **Creator** और अगर अरबी भाषा में कहेंगे तो कहेंगे **खालिक़** | और खालिक़ अल्लाह ही का एक नाम है| इसका मतलब:-

अल्लाह = ब्रह्मा = खालिक़ = क्रियेटर.

इसी तरह **विष्णु** शब्द हैं जो हिंदु सोचते हैं कि वो भगवान विष्णु के लिए प्रयोग हुआ हैं| लेकिन वेदो में कहीं भी ये नही लिखा हैं कि विष्णु का मतलब हैं एक आदमी समुंद्र के उपर लेट हुए हैं लक्ष्मी उनके पैर दबा रही हैं और शेषनाग उनके उपर अपना फन फेलाए हुए हैं, लेकिन वेद में ऐसा कहीं भी नही लिखा हुआ है |

बल्कि विष्णु का मतलब होता हैं इस संसार कि रक्षा करने वाला. अगर विष्णु को अरबी में कहेंगे तो कहेंगे हाफ़िज़ | हाफ़िज़ का मतलब होता हैं हिफ़ाज़त करने वाला | मतलब ये के ईश्वर ने वेदो मे कहा हैं कि इस संसार को बनाने वाला(ब्रह्मा) और इस संसार कि रक्षा करने वाला(विष्णु) भी मैं ही हूँ और क़ुरान शरीफ में कई जगह पर अल्लाह के लिए हाफ़िज़ शब्द प्रयोग हुआ है| इसका मतलब:-

अल्लाह=ईश्वर=ब्रह्मा=विष्णु=खालिक़=हाफ़िज़|

इसी तरह किसी भी भगवान का नाम वेद में नही है…अब जानते हैं वेद और दूसरे हिंदु धर्म ग्रंथ ईश्वर(अल्लाह) के बारे में क्या कहते हैं| और क़ुरान शरीफ अल्लाह के बारे में क्या कहती है|

सबसे पहले जानते हैं हिंदु धर्म कि नीव यानी वेद अल्लाह के बारे मैं क्या कहती हैं.

यजुर्वेद:

यजुर्वेद के इन् श्लोको पर ध्यान दीजिए..

1)- "ना तस्या प्रतिमा अस्ति"

[यजुर्वेद:- 32:3]

अर्थ: "उस ईश्वर कि कोई प्रतिमा(पिक्चर, मूर्ति,स्टॅच्यू,फोटो, अक्स, परच्छाई) नही हैं."

यानी ईश्वर कि कोई मूर्ति नही हैं कोई प्रतिमा, फोटो, परच्छाई नही हैं.. ये यजुर्वेद में लिखा हुआ हैं. वोही वेद जो हिंदु धर्म कि नीव हैं.

यजुर्वेद में आगे लिखा हुआ हैं…

2)- **वो ईश्वर निराकार हैं और पवित्र है|**

[यजुर्वेद:40:8]

निराकार का मतलब होता हैं. जिसका कोई आकार ना हो|

यानी उस ईश्वर का कोई आकार नही है|

यजुर्वेद में एक जगह ये लिखा है-

3)- **“अंधतमा प्रविशन्ति ये असंभूति मुपारित्त”**

[यजुर्वेद:- 40:9]

अर्थ:- “वो लोग अंधकार में प्रवेश कर रहे हैं जो असंभूति को पूजते हैं. और वो लोग और ज़्यादा अंधकार में प्रवेश कर रहे हैं जो लोग संभूति को पूजते हैं..”

असंभूति का मतलब होता प्राक्रतिक वस्तु |

जेसे:- हवा,पानी,पैड पौधे इत्यादि

संभूति का मतलब होता हैं इंसान कि खुद कि बनाई हुई वस्तु |

जेसे:- कुर्सी, प्रतिमा, मूर्ति इत्यादि

ये सब मैं अपनी तरफ से नही कह रहा हूँ कि मूर्ति को हवा को पैड पौधो को पूजना नही चाहिए ये तो यजुर्वेद में लिखा है |

अब देखते हैं अथरवा वेद अल्लाह(ईश्वर के बारे में क्या कहती हैं..

अथरवा वेद:

अथरवा वेद के इन श्लोको पर ध्यान दीजिए-

1)- **“देव महा ओसी”** [अथरवा वेद:- 20:58:3]

अर्थ: “ईश्वर सबसे बड़ा(महा) है”|

बिल्कुल यही शब्द कुरान शरीफ में कहे गये हैं|

“अल्लाह सबसे बड़ा है” [कुरान:- 13:9]

और यही अज़ान जब होती हैं सबसे पहले कहा जाता हैं.

“अल्लाहू अकबर”

अर्थ: “अल्लाह सबसे बड़ा(अकबर) हैं”

ऋग्वेद:

ऋग्वेद के इन् श्लोको पर ज़रा ध्यान दीजिए के ऋग्वेद में ईश्वर के बारे में क्या लिखा हैं?

1)- **“मा चिन्दयाद्वि शंसता”** [ऋग्वेद:- 8:1:1]

अर्थ: “ओ साथियो किसी और को मत पूजो उस एक के सिवा”

देखिए ये ऋग्वेद में लिखा हैं कि उस एक ईश्वर के सिवा और किसी को मत पूजो| और ऋग्वेद चारो वेद मे से सबसे पुरानी और सबसे पवित्र मानी जाती है

यही इस्लाम का पहला कलिमा कहता है-

“ला इलहा इल्लाल्लाह”

अर्थ: “नही हैं कोई पूजने के लायक सिवाए अल्लाह के”

एक जगह ऋग्वेद में कहा गया हैं…

ईश्वर सिर्फ़ एक हैं लेकिन उसपे विश्वास रखने वाले उस ईश्वर को अलग अलग नाम से बुलाते हैं.

और सिर्फ़ वेद मैं ही ईश्वर(अल्लाह) के **33** अलग अलग सिफाति नाम दिए गये हैं |

जेसे:- ब्रह्मा, विष्णु, महाशक्तिमान, परमेश्वर, अजन्मा, निराकार इत्यादि

और में आपको बता चुका हूँ ब्रह्मा का मतलब हैं बनाने वाला. ये यहाँ पर ब्रह्मा भगवान के लिए नही हैं. अगर कोई हिंदु कहता हैं कि अल्लाह ब्रह्मा हैं इसमें कोई बुराई नही है ब्रह्मा का मतलब हैं खालिक़. और बेशक अल्लाह खालिक़ हैं पर अगर कोई हिंदु ये कहेगा कि ब्रह्मा वो हैं जिसके 4 सिर हैं और चारो सिर पे ताज है और 6 हाथ हैं, तो ये ग़लत होगा क्युकि यजुर्वेद में लिखा है-

1)- **“ना तस्या प्रतिमा अस्ति”** [यजुर्वेद:- 32:3]

अर्थ: “उस ईश्वर कि कोई प्रतिमा(पिक्चर, मूर्ति,स्टॅच्यू,फोटो, अक़्स, परच्छाई) नही हैं.” वो निराकार हैं…

और वो वेदो के खिलाफ भी जा रहा है वोही वेद जो हिंदु विद्वानो के अनुसार हिंदु धर्म कि नीव हैं. और जो वेद में लिखा हैं वो सच हैं. और यजुर्वेद में ये भी कहा गया हैं कि ईश्वर निराकार हैं.

2)- **“या इक इतमुष्टि:”** [ऋग्वेद:- 6:45:16]

अर्थ: “सिर्फ़ उसी को पूजो जिसके जेसा कोई नही और वो अकेला हैं और एक हैं”

और हिंदु धर्म में एक **ब्रह्मा सूत्र** है… वो ये है-

“एककम ब्रहम द्वित्या नास्ते नेह ना नास्ते नास्ते किंचन”

अर्थ: "ईश्वर(अल्लाह) एक ही हैं, दूसरा नही हैं, नही हैं ज़रा भी नही हैं"

ये थे वेदो के कुछ श्लोक जो कहते हैं कि ईश्वर(अल्लाह) एक हैं, उसकि कोई प्रतिमा नही, वो निराकार हैं, उसकि कोई मूर्ति या फोटो नही, और सिर्फ़ उसी कि पूजा करो.. और जो अपने हाथो से बनाई हुई चीज़ो कि पूजा करते हैं वो भी अंधकार में हैं और वो भी जो प्राक्टिक चीज़ो कि पूजा करते हैं|

उपनिषद्:

छन्दोग्या उपनिषद् के इन् श्लोको पर ध्यान दीजिए…

1)- **"एक्कम एवी द्वित्यम"** [छन्दोग्या उपनिषद्:- 32:3]

अर्थ: "ईश्वर(अल्लाह) एक ही है, दूसरा नही है"

बिल्कुल यही शब्द क़ुरान शरीफ में हैं |

"क़ुल हू अल्लाहू अहद" [क़ुरान शरीफ:- 112:1]

अर्थ: "कहो के अल्लाह(ईश्वर) सिर्फ़ एक है"

स्वेतास्वतारा उपनिषद् के इन् श्लोको पर ध्यान दीजिए..

1)- "ना कास्या कसूज जनीता ना कधिपह"

[स्वेतास्वतारा उपनिषद्:- 6:9]

अर्थ: *"उस ईश्वर के ना तो कोई माँ बाप हैं ना उसकि कोई औलाद हैं ओर ना कोई उसका खुदा हैं"*

ज़रा ध्यान दीजिए उपनिषद् का ये श्लोक क्या कह रहा हैं कि उस ईश्वर के कोई माँ बाप नही हैं ओर ना कोई औलाद हैं, इसका मतलब क्या हुआ यही के उस ईश्वर को ना तो किसी ने जन्म दिया ना वो किसी को जन्म देता हैं यानी उसकि अपनी कोई औलाद नही है| उसका कोई खुदा नही हैं| यानी उस्से उपर कोई नही है. उसने पूरी दुनिया को बनाया और इंसान को बनाया मिट्टी और पानी से यानी गारे से. उसने सब इंसान को बनाया हैं| वो अकेला खालिक़ हैं और बाकि सब उसकि बनाई मखलूक़ हैं|

और जेसा इस श्लोको में लिखा हैं.. वेसा ही कुछ क़ुरान शरीफ में लिखा हैं.. ज़रा ध्यान दीजिए क़ुरान कि इस आयात पे-

“लम यलिद वलम युलद” [क़ुरान शरीफ:- 112:3]

अर्थ: “ना तो वो किसी से जना हैं और ना वो किसी को जनता हैं”

और स्वेतास्वतारा उपनिषद् में लिखा है- जेसा यजुर्वेद के पाठ – 32, श्लोक – 3 में लिखा हैं वेसा ही स्वेतास्वतारा उपनिषद् के इस श्लोक में लिखा है-

“ना तस्या प्रतिमा अस्ति”

[स्वेतास्वतारा उपनिषद्:- 4:19]

अर्थ: “उस ईश्वर कि कोई प्रतिमा(पिक्चर, मूर्ति,स्टॅच्यू,फोटो, अक़्स, परच्छाई) नही है”|

“नैनम उर्ध्वम ना तिर्यन्सम ना मध्ये ना परिजग्रभत ना तसी प्रतिमे अस्ति यस्या नम महद यसह”

[दा प्रिन्सिपल उपनिषद् बाइ एस. राधाकृष्णन पेज- 736, 737]

अर्थ: “उस ईश्वर के जेसा कोई नही हैं.. और उसकि कोई प्रतिमा नही हैं..”

और अब ध्यान दीजिए क़ुरान शरीफ कि इस आयात पे..

“वलम या कुन -लहू कुफ़ुवन अहद” [क़ुरान शरीफ:- 112:4]

अर्थ: “और उसके जेसा कोई नही हैं”|

और ये श्लोक स्वेतास्वतारा उपनिषद् के ये सिद्ध करते हैं कि इंसान उस ईश्वर को अपनी इन् आँखो से नही देख सकता.. ये श्लोक कुछ इस तरह हैं…

“ना सांद्रसे तीस्थती रूपम अस्या, ना काक्सूसा पस्यति कस सनैअम, हृदा हृदिस्थाम मानसा या एनम, एवं विदुर अम्रतास ते भवंती.”

[स्वेतस्वाटरा उपनिषद्:- 4:20]

अर्थ: “उसको देखा नही जा सकता, कोई बी इंसान उसको अपनी आँखो से नही देख सकता, और जो लोग उसे दिल से और दिमाग़ से मानते हैं और उसपे यकिन रखते उनके लिए वो हैं और हमेशा ज़िंदा रहने वाला हैं ”

और अब क़ुरान शरीफ कि इन् आयात पे ध्यान दीजिए|

“ला तुद्रिकुहुल अबसारू वा-हुवा युद्रिक-उल अबसार, वा-हुवल लतीफ-उल-खबीर”

[क़ुरान शरीफ़:- 6:103]

अर्थ: “निगाहे उसे नही पा सकती.. बल्कि वोही निगाहो को पा लेता हैं.. वो हर चीज़ कि खबर रखने वाला हैं..”

यानी वेदो और उपनिषद् में साफ साफ लिखा हैं कि ईश्वर(अल्लाह) सिर्फ़ एक है, उस ईश्वर को कोई इंसान अपनी इन आँखो से नही देख सकता, उस ईश्वर को कभी मौत नही आयेगी वो अमर हैं| अब आप सोचिए कि वेदो में लिखा है कि जो लोग संभूति (यानी अपने हाथ से बनाई हुई चीज़े) को पूजते हैं वो लोग घोर अंधकार में हैं, और जो असंभूति(प्राक्रातिक चीज़े) को पूजते हैं वो लोग भी अंधकार(पाप कर रहे हैं) में हैं| और मूर्ति भी तो इंसान अपने हाथ से बनाता है, और वेद में लिखा हुआ हे जो मूर्ति जेसी अपने हाथ से बनाई हुई चीज़ो को पूजते हैं वो अंधकार में हैं| और अगर कोई फिर भी मूर्ति को पूजता हैं तो पाप कर रहा हैं अंधकार में हैं और वो वेदो के खिलाफ भी जा रहा हैं.. ये मैं अपनी तरफ से नही कह रहा के मूर्ति पूजा करना पाप है ये तो वेद कह रहे हैं जो हिंदु धर्म कि नीव है|

और अगर आप हिंदु धर्म कि किताब पढ़ेंगे तो किसी भी किताब में किसी भी भगवान ने ये नही कहा के मैं ईश्वर हूँ मेरी मूर्ति बनाओ और उसे पूजो किसी भी भगवान ने ऐसा नही कहा चाहे वो कोई भी भगवान हो(श्री कृष्णा, श्री राम, शिवजी. हनुमान). बल्कि सभी भगवान ने ये कहा हे कि मैं ईश्वर का भक्त(बंदा) हूँ. और कहा तुम लोग उस एक ईश्वर कि पूजा करो. जिसकि पूजा मैं करता हूँ. जो तुम्हारा भी ईश्वर हैं और मेरा भी ईश्वर हैं… और यही कहा गया हैं क़ुरान शरीफ में कि उसी एक अल्लाह(ईश्वर) कि इबादत करो जिसने पूरी क़ायनात को बनाया ओर तुम्हे बनाया गीली मिट्टी(यानी गारे) से..

अब आप कहेंगे कि तो फिर श्री कृष्णा, श्री राम, शिवजी इत्यादि ये सब कौन हैं??

आपके इस सवाल का जवाब दिया हैं क़ुरान शरीफ में..

क़ुरान शरीफ में अल्लाह ने कहा है-

“जब कभी भी किसी ज़मीन के हिस्से में बुराई बढ़ने लगी और लोग अल्लाह से दूर होने लगे.. तो उस जगह हमने अपने एक बंदे(भक्त) को भेजा पैग़म्बर(सन्देश्ता) बना कर ताकि वो लोगो को अल्लाह(ईश्वर) कि तरफ बुलाए उन्हे बुराई से रोके और वहाँ से बुराई ख़तम हो सके”

और यही बात लिखी हैं भागवत गीता में ध्यान दीजिए-

“यदा यदा ही धर्मास्या ग्लनिर्भवती भारत, अभ्युत्थानम धर्मास्या तदात्मानम सुजाम्यहम”

अर्थ: “जब जब अधर्म का अंधकार छाएगा तब तब इस दुनिया में एक इंसान ऐसा आएगा जो इस अंधकार को मिटाएगा”

तो ये साफ साफ बता दिया गया हैं क़ुरान में और भागवत गीता में जो हिंदु धर्म में सबसे ज़्यादा पढ़े जाने वाली किताब हैं कि वो सब भगवान नही बल्कि ईश्वर के भक्त(बंदे) थे जिन्हे ईश्वर ने बुराई को ख़त्म करने के लिए भेजा था|

और हो सकता हैं कि ये सब अल्लाह(ईश्वर) के पैग़म्बर हों.. मैं पूरे यकिन के साथ नही कह सकता क्युकि अल्लाह ने अपने आखरी संदेश क़ुरान शरीफ में कहा हैं कि हमने इस धरती के हर हिस्से में खबरदार करने वाले(पैग़म्बर) भेजे हैं. लेकिन क़ुरान शरीफ में सिर्फ़ 25 पैग़म्बर(सन्देश्ता) का उल्लेख हैं. और क़ुरान में ये भी कहा हैं कि ज़मीन के हर हिस्से में हमने अपने एक किताब अवतरित(उतारी) की है जो लोगो को ईश्वर कि तरफ बुलाए लेकिन क़ुरान में सिर्फ़ 4 किताबो का उल्लेख हैं.. तो इसका मतलब ये नही हैं कि सिर्फ़ **25** रसूल और **4** किताब ही ईश्वर ने भेजी हैं बल्कि उसने तो ज़मीन के हर हिस्से में एक रसूल(सन्देश्ता) और एक किताब भेजी हैं.. क़ुरान में आता हैं कि इस ज़मीन पर अल्लाह ने **1,24,000** पैग़म्बर(सन्देश्ता) भेजे हैं| क्युकि क़ुरान शरीफ का मक़सद पैगम्बरो के नाम और किताबो के नाम गिनवाना नही था इसीलिए उसमे सिर्फ़ उन 25 पैग़म्बर का उल्लेख हैं जिनके बारे में अरब के लोग जानते थे… अगर अल्लाह क़ुरान शरीफ में सब(1,24,000) पैगम्बरो का उल्लेख करता तो ये क़ुरान शरीफ बहुत मोटी किताब हो जाती| ये क़ुरान शरीफ तो हम लोगो के लिए इसलिए उतरा के हम उस एक सच्चे ईश्वर को पहचाने और उसके हुक्म के मुताबिक अपनी ज़िंदगी गुज़ारे |

अब जानते हैं कलिमा ए तय्यब का दूसरा हिस्सा, जो है-

“मुहम्मद-उर रसूल अल्लाह”

अर्थ: “मुहम्मद(स.) अल्लाह(ईश्वर) के सच्चे पैग़म्बर(सन्देशटा) और रसूल हैं”|

पहले जानते हैं मुहम्मद(स.) कोन थे? उनके जीवन के बारे में जानते हैं फिर जानेंगे कि हिंदु धर्म के धार्मिक ग्रंथ ईश्वर के अंतिम सन्देश्ता(आखरी रसूल) मुहम्मद(स.) के बारे में क्या कहते हैं…????

मुहम्मद(ﷺ)

(सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम)

जब पूर्वी और पश्चिमी दुनिया विचारधारा के अंधकार और भ्रष्ट उपासना के अंधेरे में जीवन यापन कर रही थी | जब इंसानियत अघ्यानता, मूर्खता, पिछडापन और सांस्कृतिक गिरावट से जूझ रही थी | पूरी दुनिया में एक को ईश्वर छोडकर बहुत से खुदा को पूजा जाने लगा और मूर्ति पूजा होने लगी|

उस समय अरब(सऊदी अरब) के लोग भी मूर्ति को पूजते थे, उस समय काबा में 360 मूर्तियाँ रखी थी| जब उन्हे पता लगता था के उनके घर बेटी पैदा हुई है तो उस मासूम को ज़िंदा ज़मीन में दफ़ना देते थे, शराब के नशे में डूबे रहते थे, औरतो को सिर्फ़ ज़रूरत कि चीज़ सामझा जाता था, नौकरो पर अत्याचार होता था|

तब अरब के शहर मक्का में वर्ष 570(ईस्वी) में अल्लाह के आखरी रसूल(सन्देश्ता) मुहम्मद (स.) का जन्म हुआ | उनकि माँ का नाम आमीना था और उनके पिता का नाम अब्दुल्लाह था| उनका जन्म मक्का के सबसे इज़्ज़तदार खानदान “क़ुरैश” में हुआ था|

जब वो 40 साल के हुए तो अल्लाह कि तरफ से एक फरिश्ता [जिबरा’ईल(अ.स)] उनके लिए ईश्वर का संदेश लाए.. वो उस समय एक घार(गुफा) में थे जिस गुफा का नाम हिरा है जब उनके पास अल्लाह का पहला संदेश आया यानी क़ुरान शरीफ कि पहली आयात उन पर नाज़ील(अवतरित) हुई| और पूरा का पूरा क़ुरान एक साथ ज़मीन पर अवतरित नही हुआ| क़ुरान थोड़ा थोड़ा करके मुहामद(स.) पर अवतरित हुआ| जबरा’ईल (आ.स) अल्लाह कि तरफ से कुछ आयात लाते हुज़ूर उनको याद करते और फिर अपने साथियो(सहाबा) से लिखवाते, और जो लिखा उस को बार बार पढ़ने को कहते ये देखने के लिए कि कहीं कुछ ग़लत तो नही लिखा गया.. इस तरह 23 साल में थोड़ा थोड़ा करके क़ुरान शरीफ ज़मीन पर अवतरित हुआ|

मुहम्मद(स.)कि मौत 8,जून, 632(ईस्वी) में हुई.. और इस दुनिया से रुखसत होने से पहले उन्होने हज्जतुल विदा के मौके पर आखरी ख़ुतबे में लोगो से कहा के “शायद आइन्दा साल तुम लोगो से फिर मुलाकात ना हो, जो तुम में से ग़रीब हैं उन्हे वोही खिलाओ जो तुम खाते हो, वोही पहनाओ जो तुम पहनते हो, क्यूंकी सबको अल्लाह ही कि तरफ लौटना हैं… और वो तुमसे तुम्हारे आमाल(करम) का हिसाब लेगा.. जो यहाँ उपस्थित हैं और जो उपस्थित नही हैं उन्हे बता दो के अल्लाह की नज़र में ना कोई अमीर ग़रीब से बड़ा है ना कोई ग़रीब अमीर से बड़ा है, ना कोई काला

गोरे इंसान से बड़ा है ना कोई गोरा काले इंसान से बड़ा है| तुम में से बेहतर इंसान वो है जो अल्लाह से डरता है और उसकी इबादत करता है और उसके सिवा किसी और को नही पूजता | और जो चीज़ मैं तुम लोगो के बीच छोडे जा रहा हूँ(यानी क़ुरान शरीफ ,रसूल कि सुन्नत और मज़हब-ए-इस्लाम) वो बिल्कुल सच्ची और रोशन हैं अगर तुम उसे मज़बूती से थामे रखोगे तो कभी अपनी राह से नही भटकोगे.. कभी ठोकर नही खाओगे"|

रसूल(सन्देश्ता)

मेरे दोस्तो इंसान को ईश्वर ने इतना दिमाग़ नही दिया के अपनी ज़िंदगी कि सही राहों को चुन सके अपनी मंज़िल को पहचान सके. ओर ना इतना दिमाग़ दिया कि वो खुद उस सच्चे ईश्वर का पता लगा सके जो पूजने लायक है और उसे पहचान सके|

इसीलिए उस ईश्वर ने इंसान को अपनी पहचान कराने के लिए अपने पैग़म्बर(सन्देश्ता) भेजे कि वो ईश्वर कि पहचान करा सके.. और वो पैग़म्बर ईश्वर ने इंसानो मे से ही चुने यानी हम इंसानो मे से ही एक को उसने पैग़म्बर बनाया… क्युकि रहबर के बिना सही राह तेय नही होती |

और पैग़म्बर और रसूल का उल्लेख हिंदु धर्म मे भी आया हैं. हिंदु उसे अवतार कहते हैं. अवतार का मतलब हैं ज़मीन पर आना|

और वो भागवत गीता(अध्याय-4, श्लोका- 7,8) मे लिखा हैं

"जब जब अधर्म का अंधकार छाएगा तब तब इस दुनिया में एक इंसान ऐसा आएगा जो इस अंधकार को मिटाएगा"

और हर पुराने धर्म की किताबो में ये भी लिखा हैं कि आखरी अवतार मुहम्मद(स.)ईश्वर के अंतिम सन्देश्ता(अवतार,रसूल, पैग़म्बर) हैं |

अल्लाह ने क़ुरान शरीफ(सुराह: फ़ातिर, सुराह नo.35, आयात नo.24) मे कहा हैं कि हमने धरती के हर हिस्से मे अपने सन्देश्ता को भेजा के वो लोगो को सच्चे ईश्वर कि तरफ बुला सके.. एक हदीस में आता है की ईश्वर ने इस धरती पर लगभग 1,24,000 इषदूत(पैग़म्बर और रसूल) भेजे हैं, कोई हिस्सा धरती का ऐसा नही जिसमे पैग़म्बर या रसूल ना आए हो. लेकिन क़ुरान शरीफ में सिर्फ़ 25 पैग़म्बर का उल्लेख हैं और सिर्फ़ 4 किताब का उल्लेख हैं जो ईश्वर ने इस ज़मीन पर अवतरित कि इन सब चीज़ो के बारे में मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ|

अब आगे चलते हैं..

ईश्वर ने तो इस ज़मीन पर 124000 रसूल और सन्देश्ता भेजे लेकिन अल्लाह ने अपने आखरी संदेश क़ुरान शरीफ [जो आखरी सन्देश्ता मुहम्मद(स.)पर अवतरित हुई] में कहा हैं कि आखरी सन्देश्ता मुहम्मद(स.)से पहले जीतने भी रसूल(सन्देश्ता) आए वो सब सिर्फ़ उस समय ओर उन लोगो के लिए थे जिनकि तरफ वो सन्देश्ता बनाकर भेजे गये थे और वो किताब सिर्फ़ उनही लोगो के लिए थी

जैसे:- ईसा मसीह सिर्फ़ ईसाइयो कि तरफ पैग़म्बर बना कर भेजे गये थे और उनकि किताब इंजील(बाइबल) सिर्फ़ ईसाइयो के लिए थी|

इसी तरह आखरी रसूल से पहले जितने भी रसूल आए वो सब उस समय ओर सिर्फ़ उन लोगो के लिए थे ना कि पूरी दुनिया और क़यामत(प्रलय) के दिन तक |

और फिर ईश्वर ने अपने आखरी संदेश क़ुरान मे कहा हैं कि..

"हमने अपने आखरी रसूल(सन्देश्ता) को भेजा पूरी इंसानियत(मानवता) के लिए करुणा बनाकर"

[क़ुरान शरीफ:- 21:107]

यानी ईश्वर खुद कह रहा हैं कि हमने उन्हे भेजा पूरी मानवता के लिए रहमत(करुणा) बनाकर. और ये आखरी सन्देश्ता हैं इनके बाद कोई और सन्देश्ता नही आएगा.. और उन पर जो वही(अवतरित) हुआ है यानी क़ुरान शरीफ वो अल्लाह कि आखरी किताब हैं जो पूरी इंसानियत(मानवता) के लिए उस ईश्वर तक पहुँचने का रास्ता हैं.. और जो ईश्वर तक पहुँच गया वो जन्नत(स्वर्ग) में प्रवेश होगा| और इसके बाद कोई किताब ईश्वर कि तरफ से नही अवतरित होगी.. ये आखरी किताब और आखरी सन्देश्ता हैं|

इसीलिए जब सबका ईश्वर एक अल्लाह हैं तो उसका भेजा हुआ अखहरी पैग़म्बर भी पूरी दुनिया के लिए है, ना कि सिर्फ़ अरब के लोगो के लिए ना सिर्फ़ के मुस्लिम लिए.. वो तो पूरी दुनिया के लिए आए थे और क़ुरान भी पूरी दुनिया के लोगो के लिए ईश्वर का आखरी संदेश हैं चाहे कोई हिंदु हो, ईसाई हो, यहूदी हो, सिख हो, जैन हो या फिर कोई भी हो चाहे वो हिन्दुस्तान में रहता हो, चाहे इंग्लेंड में, चाहे अमेरिका में, चाहे सऊदी अरब में, चाहे दुनिया के किसी भी कोने में रहता हो|

हो सकता हैं वेद और गीता भी ईश्वर कि किताब हो लेकिन वो सिर्फ़ उस समय और उन लोगो के लिए थी.. ना कि पूरी दुनिया और क़यामत तक के लिए.. पूरी दुनिया के लिए और क़यामत तक रहने वाली किताब सिर्फ़ और सिर्फ़ क़ुरान शरीफ हैं… ये मैं आपको आगे हिंदु धर्म कि किताबो से भी सिद्ध करूँगा|

आगे हम देखेंगे कि हिंदु धर्म के ग्रंथ आखरी रसूल(सन्देश्ता) के बारे में क्या कहते हैं.... और उनकि तारीफ़ कैसे कि गयी हैं हिंदु धर्म कि किताबो में|

(हिंदु धर्म ग्रंथो में)

पुराण:-

हिंदु धर्म में बहुत सी किताबे है, उनमे से एक किताब है "पुराण"| पुराण का मतलब होता हैं पुराना ओर जीवनकथा |

पुराण बहुत सारे हैं लगभग 200 पुराण हैं हिंदु विद्वानो के अनुसार. जिनमे से एक पुराण हैं "भविष्य पुराण". भविष्य का मतलब हम सब जानते हैं.. भविष्य का मतलब होता हैं "आने वाला कल" | इसका मतलब भविष्य पुराण हमे भविष्य के बारे में बताता हैं कि भविष्य में क्या होने वाला हैं या फिर क्या होगा?

भविष्य पुराण में साफ तौर पर कहा गया हैं कि.. "एक दूसरे देश में एक आचार्या अपने साथियो(सहबा) के साथ आएँगे.. उनका नाम महामद होगा, और वो रेगिस्तान क्षेत्र में आएँगे |

ये श्लोक इस प्रकार हैं-

एतस्मिन्नन्तिरे म्लेच्छ आचार्य्येण समन्वितः ॥
महामद इति ख्यातः शिष्यशाखा समन्वितः ॥

आइए भविष्य पुराण कि इन श्लोको पर ध्यान दे-

यहाँ पर **मलिच्य** शब्द आया हैं. मलिच्य का मतलब होता हैं विदेशी, और जो **महामद** शब्द आया हैं वो उस मलिच्य का नाम हैं यानी मुहम्मद (स.). और ध्यान दीजिए यहाँ लिखा हुआ हैं कि वो मलिच्य रेगिस्तान क्षेत्र में आएगा और हम सब जानते हैं सऊदी अरब(मक्का) जहाँ मुहम्मद(स.) का जन्म हुआ वो एक रेगिस्तान का इलाक़ा है|

भविष्य पुराण में बहुत से संदेशताओ कि जीवनगाथा हैं. कुछ श्लोक मुहम्मद(स.. व) और मुस्लिम धर्म के उपर इस प्रकार हैं-

लिंङ्गच्छेदी शिखाहीन: श्मश्रुधारी स दूषक: ।
उच्चालापी सर्वभक्षी भविष्यति जनो मम ।25 ।
विना कौलं च पशवस्तेषां भक्ष्या मता मम ।
मुसलेनैव संस्कार: कुशैरिव भविष्यति ।26 ॥
तस्मान्मुसलवन्तो हि जातयो धर्मदूषका: ।
इति पैशाचधर्मश्च भविष्यति मया कृत: ।27 ॥
(भ०पु० पर्व 3, खण्ड 3, अध्याय 1, श्लोक 25, 26, 27)

*अर्थ:- आचार्या महामद जो धर्म लेकर आएँगे. "**उन लोगो कि ख़तना होगी**.. वो **शिखा-हीन** होंगे, वो लोग **दाढ़ी** रखेंगे और **उँचे स्वर में अलाप करेंगे यानी अज़ान** देंगे. वो लोग **शका-हारी** और **मासा-हारी** दोनो होंगे, लेकिन उनके लिए बिना **कौल(हलाल)** यानी मंत्र(कलिमा) से पवित्र किये बिना कोई पशु खाने योग्य नही होगा(यानी वो हलाल मास खाएँगे) **वो सुअर का मास नही खाएँगे**, वो लोग **मुस्लिम** कहलाएँगे. और उनही से **मुसलवंत(निष्ठावनो)** का धर्म फेलेगा और ऐसा मेरे कहने से पेशाच धर्म का अंत होगा"*

भविष्य पुराण कि ये भविष्यवाणिया इतनी स्पष्ट हैं कि ये 100% मुहम्मद(स.) पर खरी उतरती हैं| ओर ऐसा भी नही हैं कि ये पुराण मुहम्मद(स.) के बाद लिखे गये हो हिंदु विद्वानो के अनुसार ये पुराण तो उनके जन्म से बहुत पहले लिखे जा चुके थे|

संग्राम पुराण:

संग्राम पुराण कि गिनती भी पुराणो में कि जाती हैं. संग्राम पुराण में भी ईश्वर के अंतिम सन्देश्ता मुहम्मद(स.) के आने कि पूर्व-सूचना है|

पंडित धरमवीर उपाध्याय ने अपनी किताब "अंतिम ईश्वरदूत" में लिखा है-

"कागभुसुंड़ी और गुरूद दोनो राम कि सेवा में दीर्घ अवधि तक रहे, वो उनके संदेशो को ना केवल सुनते रहे बल्कि लोगो को सुनाते भी रहे, इन् उपदेशो कि चर्चा तुलसीदास जी ने संग्राम पुराण के अपने अनुवादो में कि हैं| जिसमे **शंकर जी** ने अपने पुत्र को आने वाले धर्म और आखरी ईश्वरदूत के बारे में पूर्व-सूचना(भविष्यवाणी) दी हैं, इस सूचना का अनुवाद इस प्रकार है-

यहां न पक्षपात कछु राखहुं।
वेद, पुराण, संत मत भाखहुं॥
संवत विक्रम दोऊ अनङ्गा।
महाकोक नस चतुर्पतङ्गा॥
राजनीति भव प्रीति दिखावै।
आपन मत सबका समझावै॥
सुरन चतुसुदर सतचारी।
तिनको वंश भयो अति भारी॥
तब तक सुन्दर मद्दिकोया।
बिना महामद पार न होया॥
तबसे मानहु जन्तु भिखारी।
समरथ नाम एहि व्रतधारी॥
हर सुन्दर निर्माण न होई।
तुलसी वचन सत्य सच होई॥

(संग्राम पुराण, स्कन्द, 12, कांड 6 : पद्यानुवाद, गोस्वामी तुलसीदास)

पंडित धरमवीर उपाध्याय ने इसका भावार्थ कुछ इस तरह किया हैं-

(तुलसीदास जी कहते हैं) *"मेने यहाँ किसी प्रकार का पक्षपात ना करते हुए संतो, वेदो, और पुराणो के मत को कहा हैं, सातवीं (7 वीं) विक्रमी सदी में चारो सूर्यओ के प्रकाश के साथ वो पैदा होगा, राज करने में जेसी भी परिस्थिती हो, प्रेम से या सख्ती से वो अपना मत सभी को सामझा सकेगा, उसके साथ उसके चार सहयोगी होंगे, जिनकी सहयता से उनके अनुयायियों कि संख्या काफ़ी हो जाएगी,* ***जब तक सुंदर वाणी(क़ुरान शरीफ) इस धरती पर रहेगा उसके और महामद के बिना किसी को मुक्ति नही मिलेगी****, इंसान, भिखारी, किड़े मकोडे और जानवर सभी इस वर्तधारी का नाम लेते ही ईश्वर(अल्लाह) के भक्त हो जाएँगे..* ***फिर कोई उस तरह का पैदा नही होगा****..तुलसीदास जी कहते हैं कि उनका वचन सिद्ध और सत्य होगा"*|

अब ज़रा ध्यान दीजिए के तुलसीदास जी क्या कहते हैं-

के मैं किसी तरह का पक्षपात नही कर रहा हूँ बस वेदो, संतो और पुराणो कि बात को कह रहा हूँ के वो सातवीं (7 वीं) विक्रमी सदी में पैदा होगा | और मेने आपको बताया के मुहम्मद(स.) का जन्म 570(ईसवी) में हुआ था यानी 7वी विक्रमी सदी में| फिर आगे तुलसी दास जी कहते हैं कि वो चारो सुर्यो के प्रकाश के साथ पैदा होगा, चारो सुर्यो का मतलब हैं चारो दिशाओ के बीचो बीच और आज कि साइन्स ने ये सिद्ध कर दिया है के मक्का इस दुनिया के बिल्कुल बीचो बीच है जहाँ ईश्वर के आखरी सन्देश्ता मुहम्मद(स.) ने जन्म लिया था| और कहा के वो सूर्या के प्रकाश के साथ पैदा होगा| अब अगर आप मुहम्मद(स.) के बारे में पढ़ेंगे तो पता लगेगा के वो सुबह लगभग 4:20 पर पैदा हुए थे| फिर

आगे कहा के उसके साथ उसके 4 सहयोगी होंगे, और ये चार सहयोगी और कोई नही बल्कि चार बड़े साहबी हैं(उमर, अबु बकर, उस्मान, अली)| आगे कहा के उनके अनुयायियो कि संख्या काफ़ी हो जाएगी.. और हम सभी जानते हैं कि आज कल मुस्लिम धर्म सबसे तेज़ी से बढ़ रहा है| आगे कहा के जब तक सुंदर वाणी(क़ुरान शरीफ) इस धरती पर रहेगा उसके यानी क़ुरान शरीफ और महामद के बिना किसी को मुक्ति नही मिलेगी, यानी जब तक कोई क़ुरान शरीफ में और मुहम्मद(स.) में नही मानेगा तब तक किसी को भी मुक्ति(निजात) नही मिलेगी| आगे कहा के फिर कोई उस तरह का पैदा नही होगा इसका मतलब ये है कि उसके बाद फिर कोई पैग़म्बर(सन्देश्ता) या रसूल(ईश्वरदूत) नही आएगा यानी वो आखरी ईश्वर्दूर और सन्देश्ता होंगे | तुलसीदास जी कहते हैं उनके ये वचन सच होके रहेंगे| और वो सच हो गये हैं, क्युकि 7वीं विक्रमी सदी जा चुकि हैं और उस सदी में मुहम्मद(स.) पैदा हो चुके हैं|

यहाँ पर एक बात बता दूं के भले ही संग्राम पुराण कि गिनती अर्वाचीन पुराण(बाद में लिखे गये पुराण) में होती हो लेकिन इसका आधार पुराने हिंदु धर्म ग्रंथ ही हैं और ये बात तुलसीदास जी ने भी कही हैं के वो वेदो, पुराणो और संतो का मत बतला रहे हैं.. शंकर जी कि इस भविष्यवाणी को आप क्या कहेंगे ये तो किसी मुस्लिम ने ना तो कही ना लिखी और ना इसका अर्थ किसी मुस्लिम ने बताया.. जिस आखरी अवतार, आखरी सन्देश्ता, आखरी ईश्वरदूत कि प्रतीक्षा हिंदु कर रहे हैं वो और कोई नही बल्कि खुद मुहम्मद(स.) हैं|

कल्कि पुराण:

कल्कि पुराण भी 18 प्राचीन पुराणो में से एक हैं.. कल्कि पुराण में कल्कि अवतार का उल्लेख मिलता हैं.. कल्कि अवतार का उल्लेख ऋग्वेद में भी हैं.. कल्कि अवतार को आखरी अवतार और आखरी ईश्वरदूत भी कहा गया हैं… कल्कि अवतार का पूरा उल्लेख कुछ ऐसे है|

संस्कृत के एक बहुत बड़े विद्वान डा. वेद प्रकाश उपाध्याय ने अपने एक शोधपत्र में मुहम्मद(स.) को ही कल्कि अवतार बताया हैं.. वो अपने इस शोध पत्र में कुछ ऐसा लिखते हैं-

अवतार का अर्थ(मतलब):

अवतार शब्द “आव” उपसर्गपूर्वक और “त्र” धातु प्रत्यय लगाकर बना है| इसका अर्थ पृथ्वी(ज़मीन) पर आना है| “ईश्वर का अवतार” शब्द का अर्थ है- “सबको संदेश देने वाले महात्मा का धरती पर जन्म लेना”.. कल्कि अवतार को ईश्वर का अंतिम अवतार बताया गया हैं.. ईश्वर का अवतार का मतलब हैं ईश्वर से संबंध इंसान.. ईश्वर से संबंध इंसान भला उसके भक्त के अलावा और कोन हो सकता है? ऋग्वेद में ऐसे व्यक्ति को “किरी” कहा गया हैं.. हिन्दी में “**किरी**” शब्द का अर्थ हैं “ईश्वर का प्रशंसक” यानी ईश्वर कि प्रशंसा(तारीफ़) करने वाला, और अगर अरबी में कहेंगे तो “**अहमद**” कहेंगे और अहमद का मतलब होता हैं अल्लाह कि तारीफ़ करने वाला… तो क्या ईश्वर का प्रशंसक “**किरी**” और **अहमद** एक नही हो सकता? हर देश और हर सामय के लिए अलग अलग अवतार हुए हैं| क्युकि एक अवतार से पूरी

मानव जाती का कल्याण(भला) नही हो सकता था| क़ुरान में है कि ईश्वर ने धरती के हर भाग में रसूल भेजे हैं, **लेकिन कल्कि अवतार कि अलग विशेषता है वो किसी एक हिस्से लिए नही बल्कि सामग्र(सारे) संसार के लिए भेजे गये|**

अंतिम अवतार के आने के लक्षण:

कल्कि के अवतरित(आने) होने का सामय उस माहोल में बताया गया है जबकि बर्बरता(ज़ुल्म) का साम्राज होगा, लोगो में हिंसा और अराजकता का बोल बाला होगा, पेड़ो का ना फलना ना फूलना अगर फल फूल आए भी तो बहुत कम, दूसरो को मारकर उनका धन लूट लेना.. और लड़कियो को पैदा होते ही ज़मीन में ज़िंदा दबा देना एक ईश्वर को छोड़कर बहुत से देवी देवताओ कि पूजा, पैड पौधो और पत्थरो को भगवान मानने कि प्रवत्ती,भलाई करने कि आड़ में बुराई करने कि प्रवत्ती, ये सब कल्कि अवतार के आने के लक्षण हैं| और ऐसे ही माहौल में मुहम्मद(स.) का जन्म हुआ था जब कि काबा में 360 मूर्ति रखी हुई थी और उन्हे पूजा जाता था, वहाँ के लोग लड़कियो को पैदा होते ही ज़िंदा दबा देते थे, पूरे दिन शराब के नशे में डूबे रहते थे, ज़िना(बलात्कार) बहुत ज़्यादा होते थे, औरतो को सिर्फ़ ज़रूरत कि चीज़ समझा जाता था, औरतो का कोई हक़ नही था, ग़रीब लोगो को नौकर बना कर रखा जाता था और उन पर ज़ुल्म किया जाता था|

कल्कि का अवतार-स्थान:

कल्कि के अवतार स्थान “शम्भल” ग्राम में होने का उल्लेख कल्कि और भागवत पुराण में किया गया है| यहाँ पहले ये जानना ज़रूरी है कि “शम्भल” किसी ग्राम का नाम हैं या किसी ग्राम का विश्लेषण(कि तरफ इशारा) डा. वेद प्रकाश के मतानुसार “शम्भल” किसी ग्राम का नाम नही हो सकता, क्युकि अगर किसी ग्राम का नाम होता तो उसकि स्थिति के बारे में बताया गया होता, हिन्दुस्तान में खोजने पर अगर कोई “शम्भल” नाम का गाँव मिलता हैं तो वहाँ आज से लगभग 1450 साल पहले ऐसा कोई इंसान पैदा नही हुआ जो लोगो का उद्धारक हो, फिर अंतिम अवतार कोई खेल तो नही है कि अवतार पैदा हो और समाज में कुछ भी बदलाव ना हो| तो “शम्भाल” शब्द को एक इशारा मान कर उस पर विचार करना ज़रूरी है|

शम्भल शब्द “शम”(शांत करना) धातु से बना हैं, यानी जहाँ शांति(अम्न) मिले|

शम्भल का शाब्दिक अर्थ है- “शांति का स्थान” यानी “अम्न कि जगह”.. मक्का को अरबी में “दारूल- अम्न” कहा जाता है, जिसका अर्थ है- “शांति का घर”|

कल्कि अवतार कि जन्म-तिथि:

कल्कि पुराण में अंतिम अवतार कि जन्म-तिथि का भी उल्लेख किया गया है ये श्लोक इस प्रकार है-

"द्वादश्यां शुक्ल पक्षस्य, माधवे मासि माधवम् ।
जातो ददृशतु: पुत्रं पितरौ हृष्टमानसौ ॥

[कल्कि पुराण: 2:15]

अर्थ: जिसके जन्म लेने से दुखी मानवता का कल्याण होगा, उसका जन्म मधुमास के शुक्ल पक्ष और रबी फसल में चंद्रमा कि बारहवी(12वीं) तिथि को होगा | मुहम्मद(स.) का जन्म 12वीं रब्बी-उल-अव्वल को हुआ था, ये 12 तारीख चाँद कि तारीख हैं ना कि अँग्रेज़ी तारीख ये इस श्लोक में भी लिखा है, रब्बी-उल-अव्वल का मतलब होता हैं मधुमास का हर्षौल्लास(खुशी) का महीना|

एक दूसरे श्लोक में लिखा हैं कि-

शम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः ।
भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति ॥
(भागवत पुराण,द्वादश स्कंध,2 अध्याय,18वाँ श्लोक)

अर्थ: कल्कि "शम्भल" ग्राम के विष्णुयश नाम के पुरोहित के घर पैदा होंगे|

"विष्णुयश" कल्कि के पिता का नाम हैं, और मुहम्मद के पिता नाम "**अब्दुल्लाह**" था.. जो अर्थ विष्णुयश का होता हैं वोही अर्थ अब्दुल्लाह का होता है-

विष्णु का मतलब रक्षा करने वाला यानी "ईश्वर" और यश का मतलब "भक्त".. तो विष्णु यश का मतलब ईश्वर का भक्त | और अब्दुल्लाह 2 शब्द से बना है-"अब्द और अल्लाह", अल्लाह यानी ईश्वर और "अब्द" का मतलब होता है- बंदा(भक्त) तो "अब्दुल्लाह" का अर्थ हुआ "अल्लाह का बंदा" ओर "ईश्वर का भक्त"|

इसी तरह कल्कि कि माता(माँ) का नाम "**सुमति**" आया हैं, जिसका अर्थ हैं "शांति और मननशील स्वाभाव वाली"| मुहम्मद(स.)कि माँ का नाम "**आमीना**" था, जिसका अर्थ है- "अम्न वाली" ओर "शांति वाली"...

समस्त कल्कि पुराण और भागवत पुराण में ऐसी बहुत सी भविष्यवाणी हैं जो मुहम्मद(स.) के बारे मै है.. यहाँ पर मैं सभी भविष्यवाणी को तो नही लिख पाऊँगा पर मुख्य भविष्यवाणी से सीध कर दिया हैं कि कल्कि अवतार ही मुहामद(स.) हैं|

डा. वेद प्रकाश उपाध्याय ने अपने शोधपत्र के आखीर में लिखा है कि-

कल्कि और मुहम्मद(स.)के बारे में मुझे जो भी अभूतपूर्व बाते मिली, उसे देख कर आश्चर्या होता है कि जिस कल्कि कि प्रतीक्षा में भारतीय हिंदु बैठे हैं, वो आ चुके हैं,और वो मुहम्मद(स.) ही हैं |

उपनिषद्:

उपनिषद् भी हिंदु धर्म ग्रंथो में बहुत पवित्र माने जाते हैं, उपनिषद् में भी मुहम्मद(स.) और इस्लाम के बारे में जहाँ तहाँ उल्लेख मिलता हैं|

नागेंद्रा नाथ बासु द्वारा संपादित "विश्वकोश" के दूसरे खंड में उपनिषद् के वो श्लोक हैं जो मुहम्मद(स.)और इस्लाम के बारे में हैं, वो श्लोक कुछ ऐसे हैं-

अस्माल्लां इल्ले मित्रावरुणा दिव्यानि धत्त।
इल्लल्ले वरुणो राजा पुनर्दुदः।
हयामित्रो इल्लां इल्लल्ले इल्लां वरुणो मित्रस्तेजस्कामः ॥1॥
होतारमिन्द्रो होतारमिन्द्र महासुरिन्द्राः।
अल्लो ज्येष्ठं श्रेष्ठं परमं पूर्ण ब्रह्माणं अल्लाम् ॥2॥
अल्लो रसूल महामद रकबरस्य अल्लो अल्लाम् ॥3॥

(अल्लोपनिषद 1, 2, 3)

अर्थात, "इस देवता का नाम अल्लाह है। वह एक है। मित्रा वरुण आदि उसकी विशेषताएँ हैं। वास्तव में अल्लाह वरुण है जो तमाम सृष्टि का बादशाह है। मित्रो! उस अल्लाह को अपना पूज्य समझो। वह वरुण है और एक दोस्त की तरह वह तमाम लोगों के काम सँवारता है। वह इन्द्र है, श्रेष्ठ इन्द्र। अल्लाह सबसे बड़ा, सबसे बेहतर, सबसे ज़्यादा पूर्ण और सबसे ज़्यादा पवित्र है। मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के श्रेष्टतर रसूल हैं। अल्लाह आदि, अंत और सारे संसार का पालनहार है। तमाम अच्छे काम अल्लाह के लिए ही हैं। वास्तव में अल्लाह ही ने सूरज, चांद और सितारे पैदा किए हैं।"

इन श्लोको में साफ़ अल्लाह का और मुहम्मद(स.) का नाम है और **रसूल** शब्द भी लिखा हुआ है और इस श्लोक में ये भी बताया गया है की अल्लाह एक है वोही पूजने लायक है, उसी को पूजो, जो पूरे संसार का मालिक है और जिसने चाँद तारे ज़मीन आसमान बनाए हैं|

इस उपनिषद् के और दूसरे श्लोक मैं भी इस्लाम, अल्लाह, और उसके रसूल मुहम्मद(स.) का उल्लेख है.. ये इस प्रकार है-

आदल्ला बूक मेककम् । अल्लबूक निखादकम् ॥ 4 ॥
अलो यज्ञेन हुत हुत्वा अल्ला सूर्य्य चन्द्र सर्वनक्षत्राः ॥5 ॥
अल्लो ऋषीणां सर्व दिव्यां इन्द्राय पूर्व माया परमन्तरिक्षा ॥6 ॥
अल्लः पृथिव्या अन्तरिक्षं विश्वरूपम् ॥ 7 ॥
इल्लांकबर इल्लांकबर इल्लां इल्लल्लेति इल्लल्लाः ॥ 8 ॥
ओम् अल्ला इल्लल्ला अनादि स्वरूपाय अथर्वण श्यामा हुह्नी जनान पशून सिद्धान
जलचरान् अदृष्टं कुरु कुरु फट ॥ 9 ॥
असुरसंहारिणी हूं ह्रीं अल्लो रसूल महमदरकबरस्य अल्लो अल्लाम्
इल्लल्लेति इल्लल्ला ॥ 10 ॥
इति अल्लोपनिषद

अर्थात् "अल्लाह ने सब ऋषि भेजे और चन्द्रमा, सूर्य एवं तारों को पैदा किया। उसी ने सारे ऋषि भेजे और आकाश को पैदा किया। अल्लाह ने ब्रह्माण्ड (ज़मीन और आकाश) को बनाया। अल्लाह श्रेष्ठ है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। ऐ पुजारी! कह दे, अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं। अल्लाह अनादि से है। वह सारे विश्व का पालनहार है। वह तमाम बुराइयों और मुसीबतों को दूर करनेवाला है। मुहम्मद अल्लाह के रसूल (संदेष्टा) हैं, जो इस संसार का पालनहार है। अतः घोषणा करो कि अल्लाह एक है और उसके सिवा कोई पूज्य नहीं।"[1]

ये थे उपनिषद् के वो कुछ श्लोक जिनमे अल्लाह के एक होने उसी को पूजने, और मुहम्मद (स.) के ईश्वर के आखरी रसूल होने का उल्लेख हैं|

अब चलते हैं वेदो कि तरफ जो हिंदु धर्म कि नीव हैं

वेद:

वेदो मे मुहम्मद(स.) कि भविष्यवाणी का उल्लेख कोई आश्चर्य कि बात नही हैं, वेदो मे मुहम्मद(स.) का उल्लेख "**नरशंसा**" नाम से किया गया है|

वेदो का "नरशंसा" शब्द "**नर**" और "**आशंस**" 2 शब्दो को मिलकर बना है| "नर" का अर्थ "पुरुष" होता हैं और "आशंस" का अर्थ "प्रशंसित(प्रशंसा करने लायक)" होता है, तो "नरशंसा" का मतलब हुआ प्रशंसा करने लायक पुरुष"|

इसी तरह "मुहम्मद" शब्द "हम्द" से बना है, "हम्द" का मतलब होता हैं "तारीफ़(प्रशंसा)" और "मुहम्मद" का अर्थ होता है- "तारीफ़ करने लायक" ओर "प्रशंसा करने लायक" |

ऋग्वेद में “किरी” शब्द आया हैं, “किरी” का मतलब “ईश्वर कि प्रशंसा(तारीफ़) करने वाला” और “अहमद” का मतलब भी “अल्लाह कि तारीफ़ करने वाला” होता हैं.. अहमद भी मुहम्मद(स.)का एक नाम हैं|

वेदो के इन् सब श्लोको में “नरशंसा” का उल्लेख हैं..

[ऋग्वेद:- 1:13:3] [ऋग्वेद:- 1:18:9] [ऋग्वेद:- 1:106:4] [ऋग्वेद:- 2:3:2] [ऋग्वेद:- 5:5:2] [ऋग्वेद:- 7:2:2] [ऋग्वेद:- 10:64:3] [ऋग्वेद:- 10:142:2]

इन् सब श्लोको क अलावा अथरवा वेद, साम वेद, और यजुर वेद में भी बहुत श्लोको में“नरशंसा” का उल्लेख हैं.. यहाँ सभी श्लोको का उल्लेख करना संभव नही है पर एक भविष्यवाणी का उल्लेख करता हूँ|

अथरवा वेद के कुन्तपा पुख़्ता (पाठ-20, हिम्न-127, श्लोका-1-4) के कुछ श्लोक ऐसे हैं-

इदं जना उप श्रुत नराशंस स्तविष्यते ।
उष्ट्रा यस्य प्रवाहिणो वधूमन्तो द्विर्दश ।
वर्ष्मा रथस्य नि जिहीडते दिव ईषमाण उपस्पृशः ।
एष इषाय मामहे शतं निष्कान् दश स्रजः ।
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम् ॥

इसका अर्थ बताते हुए पं० क्षेम करण दास त्रिवेदी लिखते हैं—“हे मनुष्यो ! यह आदर से सुनो कि मनुष्यों में प्रशंसावाला पुरुष बड़ाई किया जाएगा ।

जिसकी सवारी में दो ख़ूबसूरत ऊँटनियाँ हैं । या जो अपनी बारह पत्नियों समेत ऊँटों पर सवारी करता है उसकी मान-प्रतिष्ठा की ऊँचाई अपनी तेज़ रफ़्तार से आसमान को छूकर नीचे उतरती है ।

अर्थात, ईश्वर मामहे ऋषि को सौ सोने के सिक्के देगा, दस हज़ार गायें देगा, तीन सौ अरबी घोड़े देगा और दस हार ।

अथरवा वेद के इस मंतरा में “नरशंसा” द्वारा सवारी के रूप में **ऊँठ** के उपयोग कि जो बात कही गयी हैं उस्से “नरशंसा” कि पहचान के साथ उसके आने कि जगह का भी पता लगता है| उष्ट्रा का मतलब होता है ऊँठ | ऊँठो कि सवारी का मतलब ये होता हैं कि “नरशंसा” जिस जगह पैदा होगा वहाँ ऊँठो कि सवारी कि जाती होगी.. और ऊँठो कि सवारी रेगिस्तान के इलाक़ो मे कि जाती हैं.. और मुहम्मद (स.) अरब के रेगिस्तान वाले इलाक़े में पैदा हुए थे|

“नरशंसा के पास **12 पत्नियाँ** होंगी और मुहम्मद(स.) कि भी **12 बीवियाँ** थी| उनकि पत्नियो के नाम कुछ इस प्रकार हैं|

1)- हज़रत खातीजा(र.अ)

2)- हज़रत अईशा(र.अ)

3)-हज़रत ज़ेनब(र.अ)

4)-हज़रत सौदा(र.अ)

5)-हज़रत हफ़सा(र.अ)

6)-हज़रत उम्मे-सलमा(र.अ)

7)-हज़रत उम्मे-हबीबा(र.अ)

8)-हज़रत ज़ेनब(र.अ)

9)-हज़रत रिहाना(र.अ)

10)-हज़रत सफिया(र.अ)

11)-हज़रत जुवेरिया(र.अ)

12)-हज़रत मेमुना (र.अ)

और यहाँ "**मामहे ऋषि**" से मतलब मुहम्मद(स.)से ही हैं.. "मामहे ऋषि" को ईश्वर द्वारा 100 स्वर्ण सिक्के देने का मतलब ऐसे व्यक्तियो से है जो रत्नवत महत्तव के हो, मुहम्मद(स.) लोगो को जो शिक्षा देते थे उन शिक्षा कि रक्षाकरने का काम 100 लोग करते थे, जिन्हे **असाहाब-ए-सुफफ** कहा जाता था| ये लोग उन शिक्षा को लोगो तक पहुँचते भी थे और उनकि रक्षा भी करते थे..

इसी तरह **10000 गौ(गाएँ)** दिए जाने का मतलब अच्छे और सच्चे इंसानो से है, गौ एक अलंकारिक शब्द है जो अच्छे व्यक्तियों के लिए प्रयोग होता है मुहम्मद(स.) के अनुयायियो कि गिनती उनके जीवन के अंत में 10000 थी| जब मुहम्मद(स.) अपने **10000 अनुयायियो** के साथ मक्का पहुँचे तो ना वहाँ किसी प्रकार का उन्होने युद्ध किया, ना किसी अनुयायियो ने किसी से बदला लिया| इसीलिए उन्हे अच्छा इंसान यानी गौ कहा गया हैं|

"नरशंसा" को **300 अरवा** दिए जाने का अर्थ "वीर योद्धओ" से है जो "घोड़ो" कि तरह तेज़ हो, "अरवा" शब्द का शाब्दिक अर्थ **घोड़ा** होता है, यह भी एक अलंकारिक शब्द हैं.. **बद्र के युद्ध में मुहम्मद(स.) के साथियो कि संख्या 300 थी|**

“नरशासा” को **10 गले के हार** देने का अर्थ ऐसे इंसानो से हैं जो गले के हार कि तरह हो और “नरशंसा” को प्रिय हो, **मुहम्मद(स.) के साथ 10 उनके अनुयायी ऐसे थे जो हर समय गले कि हार कि तरह उनके आस पास रहते थे और उन पर अपनी ज़िंदगी तक सामर्पित करने को तैयार रहते थे|** ये 10 अनुयायी “**अशरो-मुबश्शरा**” भी कहे जाते थे| ये वो अनुयायी हैं जिन्हे जन्नत कि खुशख़बरी भी दी गयी|

1. **हज़रत अबु बकर(र.अ)**
2. **हज़रत उमर (र.अ)**
3. **हज़रत उस्मान (र.अ)**
4. **हज़रत अली (र.अ)**
5. **हज़रत तल्हा (र.अ)**
6. **हज़रत ज़ुबैर (र.अ)**
7. **हज़रत साद (र.अ)**
8. **हज़रत अबु-ऊबैदा (र.अ)**
9. **हज़रत अब्दुल रहमान (र.अ)**
10. **हज़रत सईद (र.अ)**

अथरवा वेद के एक मंतरा में कहा गया है- “यह खुशख़बरी ध्यानपूर्वक सुनो, नरशंसा” कि प्रशंसा कि जाएगी.. 6090 दुश्मनो में हम इस हिजरत करने वाले और अम्न फैलाने वाले को हम सुरक्षित रखेंगे”| ये 6090 दुश्मन और कोई नही बल्कि मक्का के वो लोग हैं जो मुहम्मद(स.) के खिलाफ थे| इतिहास अगर आप उठा कर देखेंगे तो पता लगेगा कि मक्का कि आबादी उस समय 6090 थी जो उनके विरोधी थे, और हिजरत का मतलब हैं एक जगह से दूसरी जगह पर जाना और मुहम्मद(स.) भी मक्का से हिजरत करके मदीना गये थे, इसीलिए उन्हे यहाँ हिजरत करने वाला कहा है|

ऋग्वेद के भी मंतरा एक में “मामाहे ऋषि” के साथ 10000 साथी होने का उल्लेख आया हैं.. ये मंतरा कुछ ऐसे हैं-

अनस्वन्ता सतपतिर्मामहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघोनः ।
त्रैवृष्णो अग्ने दशभिः सहस्रैर्वैश्वानरः त्र्यरुणाश्चिकेत ॥

(ऋग्वेद म० 5, सू० 27, मंत्र 1)

अर्थात, हक़परस्त, अत्यन्त विवेकशील, शक्तिशाली, दानी मामहे ऋषि ने कलाम (वाणी) के साथ मुझे सुशोभित किया। सर्वशक्तिमान, सब ख़ूबियाँ रखनेवाला, सारे संसार के लिए 'कृपामय' दस हज़ार सहयोगियों (सहाबा) के साथ मशहूर हो गया।

-

“मामाहे ऋषि” को ही मुहम्मद(स.)मान लिया गया हैं.. जो ईश्वर के आखरी रसूल(ईश्वरदूत), पैगम्बर(सन्देश्ता) हैं| डा. वेद प्रकाश उपाध्याय ने मुहम्मद(स.) को ही “मामेह ऋषि” कहा हैं|

भागवत गीता:

भागवत गीता हिंदु धर्म में सबसे ज़्यादा पढ़े जाने वाली किताब है| इस में भी मुहम्मद(स.)का उल्लेख हैं लेकिन हिंदु जब पढ़ते हैं तो वो समझ नही पाते क्युकि उन्हे “संस्कृत” नही आती वो वोही सुनते और सामझते हैं जो पंडित उन्हे बताते है ज़रा ध्यान दीजिए भागवत गीता के ये श्लोक क्या कहते हैं-

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः।
यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया॥ १ ॥

न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः।
अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः॥ २ ॥

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम्।
असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ ३ ॥

बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः क्षमा सत्यं दमः शमः।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च॥ ४ ॥

[भागवत गीता: अध्याय-10, श्लोक- 1-4]

<u>अर्थ:</u> *“ऐसी सुबह(भूया) आने वाली है, एक युगपुरुष इस संसार में सत्य वचन के साथ आने वाला है, अगर तुम लोग उसकि बातो को सुनोगे बहुत अच्छी बातें होंगी, उसकि बातो को तुम सुनोगे कबूल करोगे तो तुम्हारे खुद के हित कि कामयाबी है(1) उस सामय में उनसे बड़ा विद्वान(विदू) कोई नही होगा, ईश्वर खुद उस को वो इल्म देकर भेजेगा,* ***वो ईश्वर उस महापुरुष का अहमद(अहमद) नाम रख कर भेजेगा****, जब वो महापुरुष आएँगे तो वो लोगो को एक ईश्वर कि तरफ बुलाएँगे(2)* ***वो महापुरुष ऐसे ईश्वर कि तरफ बुलाएँगे जिस ईश्वर ने आदि से लेकर अंत तक किसी युग में किसी से जन्म नही लिया(वो अजन्मा हैं), वोही वो ईश्वर हैं जो पूरे संसार का बनाने वाला, पालनेवाला, और हिफ़ाज़त करने वाला वो एक ईश्वर है, उस ईश्वर को कभी ना तो मौत आई ओर ना कभी मौत आएगी(वो अमर है) ऐसे ईश्वर को जो मानेगा वो अपने सारे के सारे पापो(गुनाहो) से मुक्त हो जाएगा****(3) वो जो “महापुरुष(अहमद)” हैं उन्होने उस इल्म से(जो ईश्वर ने उन्हे दिया हैं) लोगो के सामने ईश्वर कि सच्ची बाते रखी हैं, लोगो को पसंद नही आया तो लोगो ने उन्हे मारा, पर उनकि ये आदत थी के वो उन लोगो को माफ़(क्षमा) कर देते थे, सुख भी आए दुख भी आए जेसी भी परिस्थितिया रही हो, वो ईश्वर कि सच्ची बाते लोगो तक पहुँचाते रहे(4)”*|

ये थे भागवत गीता के उन श्लोको का अर्थ जिसमे ईश्वर के एक होने का, वो ईश्वर जो "अजन्मा" हैं "अमर" हैं.. और मुहम्मद (स.) के बारे में कि वो "महापुरुष" जब आएँगे तो वो लोगो को एक "ईश्वर" कि तरफ बुलेंगे और और उस "ईश्वर" को और उनकि बातो को जो मानेगा वो अपने सभी गुनाहो से मुक्त हो जाएगा, और ये बात तो सभी को पता है कि मुहम्मद(स.) का यही संदेश था के एक ही "अल्लाह" कि "इबादत" करो जिसका कोई "शरीक(साझी)" नही है|

अब जानते हैं सिख धर्म अल्लाह(ईश्वर) के बारे में क्या कहता हैं??

जेसे कि हम सबको पता हैं कि सिख धर्म कि स्थापना करने वाले हैं "श्री गुरु नानक साहिब"| उन्होने इस धर्म कि शुरुआत पंद्रहवी सदी के आखीर में कि थी, ये भी सभी जानते हैं कि इस धर्म कि शुरुआत हुई थी "पंजाब" और "पाकिस्तान" के कुछ भागो में, गुरु नानक साहब एक हिंदु क्षत्रिय परिवार में पैदा हुए थे, पर वो "इस्लाम" और "मुसलमानो" से बहुत ज़्यादा प्रभावित थे|

परिभाषा:

सिख शब्द बनता हैं "सीस्या" से जिसका मतलब है- "अनुयायी"| सिख धर्म 10 गुरुओं का धर्म हैं| पहले हैं "गुरु नानक साहिब" और दसवे हैं "गुरु गोबिंद साहिब"| और सिख लोगो कि पवित्र किताब हैं "श्री गुरु ग्रंथ साहिब" जिसे "आदि ग्रंथ साहिब" भी कहा जाता है|

अगर आप किसी सिख से पूछेंगे कि खुदा कि परिभाषा क्या है? तो वो आपको एक ही जवाब देगा जो हैं सिख लोगो का "मूल मंतरा" जो "ग्रंथ साहिब" के शुरू में हैं उसका अर्थ कुछ ऐसे है-

अर्थ: "पूरी दुनिया को बनाने वाला सिर्फ़ एक खुदा है, जिसका नाम सच हैं, जिसे किसी का डर नही, उसकी कोई प्रतिमा, कोई फोटो कोई मूर्ति कुछ नही हैं… वो अजन्मा हैं.. और वो एक सच्चा खुदा है|"

गुरु ग्रंथ साहिब भी कहती हैं कि एक ही खुदा है, जो "ओंकारा" है यानी जिसे कोई नही देख सकता | और "ग्रंथ साहिब" में भी उस खुदा के अलग अलग नाम दिए गये हैं… जेसे..

करतार - खालिक़,ब्रह्मा

रहीम - कृपा करने वाला

वाहे गुरु- एक सच्चा खुदा इत्यादि|

और गुरु ग्रंथ साहिब में बहुत सी बाते क़ुरान शरीफ जेसी हैं… हम जानते हैं “गुरु नानक साहिब” हिन्दुस्तान इतिहास के महान कवि कबीर जी से बहुत प्रभावित थे| गुरु ग्रंथ साहिब में बहुत से दोहे कबीर जी के भी हैं, इनमे से एक ये हैं-

“दुख में सुमिरना सब करें, सुख में करें ना कोया.. जो सुख सुमिरना करी तो दुख काहे होया..”

अर्थ:- “दुख में सभी ईश्वर को याद करते हैं पर सुख में कोई याद नही करता, अगर उसे सुख में भी याद करो तो कभी दुख नही आएगा”|

यही लिखा हैं क़ुरान शरीफ में-

“जब इंसान को थोड़ी तकलीफ़ पहुँचती हैं तो वो सिर्फ़ अल्लाह को पुकारता है| और जब अल्लाह उस पर से वो तकलीफ़ डोर कर देता हैं तो वो उसे भूल जाता है| जिससे वो अपनी राह से भटक जाता हैं और दूसरो को उसका शरीक(साझी) ठहराता है”| [क़ुरान: 39:8]

यहाँ पर एक बात बता दूं के सिख धर्म सख्ती से कहता हैं कि सिर्फ़ एक खुदा कि इबादत करो और सिख धर्म भी सख्ती से मूर्ति पूजा को माना करता है|

आखरी परिणाम:-

ईश्वर कि परिभाषा: अब सब कुछ पढ़ने के बाद परिणाम निकालते हैं कि किस धाम में ईश्वर कि क्या परिभाषा है|

हिंदु धर्म में: हिंदु धर्म कि सभी ग्रंथो का अध्यन करने के बाद ये पता चलता हैं कि..

“**ईश्वर एक हैं.. दूसरा नही हैं..उस ईश्वर कि कोई प्रतिमा, कोई मूर्ति, कोई फोटो, कोई आकार, कोई शरीर नही हैं वो निराकार है, उसके कोई माँ बाप नही है, यानी उसे किसी ने जन्म नही दिया वो अजन्मा है, ना उसकि कोई संतान है, यानी वो किसी को नही जनता ना उसकि कोई बीवी है, वो तो इन् सब कमज़ोरियो से पवित्र है| वो ना तो कभी मरा है ना कभी मरेगा यानी वो अमर हैं”|**

सिख धर्म में: गुरु ग्रंथ साहिब में उस “वाहे गुरु” कि परिभाषा कुछ ऐसे है|

“इस पूरी दुनिया को पैदा करने वाला(करतार), बनाने वाला, पालने वाला(परवरदिगार) सिर्फ़ और सिर्फ़ एक सच्चा खुदा हैं(वाहे गुरु) जिसे आज तक मौत नही आई और ना कभी आएगी, जिसे किसी ने जन्म नही दिया, जिसकि कोई मूर्ति, कोई फोटो, कोई आकार, कोई शरीर, कुछ नही है, उसका नाम सच है, उसके कोई माँ बाप नही कोई संतान नही कोई बीवी नही वो तो इन् सब चीज़ो से पाक हैं”|

इस्लाम धर्म में: इस्लाम धर्म जो एक अल्लाह(ईश्वर) का धर्म है ये पूरी दुनिया जानती हैं कि इस्लाम सिर्फ़ एक खुदा कि तरफ बुलाता है हर मुस्लिम सिर्फ़ एक ही अल्लाह में मानता है| और कोई भी मुस्लिम किसी फोटो किसी मूर्ति या किसी भी पैग़म्बर या देवी देवताओ कि इबादत नही करता, इसलिए यहाँ परिभाषा देना ज़रूरी नही लेकिन फिर भी मैं यहाँ क़ुरान शरीफ कि एक सूरत का अर्थ लिखूंगा जिसमे अल्लाह की अपनी परिभाषा बताई है|

“कहो के..!!! अल्लाह एक हैं.. वो अल्लाह निरपेक्ष है(यानी सब जीव-जन्तु उसके मोहताज हैं वो किसी का मोहताज नही), ना तो वो किसी से जना(जन्मा) है ना उस से कोई जना(जन्मा) है[यानी ना तो उसकि कोई औलाद हैं ना उसके कोई माँ बाप हैं], उसका कोई समक्ष नही[यानी उसके जेसा कोई नही उसका कोई शरीक, साझी नही हैं वो अकेला हैं..]” |

[क़ुरान: सुराह इख्लास, सुराह न. 112]

अब आप यह सोचिए, कि हर धर्म में ईश्वर(अल्लाह) कि एक ही परिभाषा दी गयी हैं| ख़ास कर में यहाँ हिंदु धर्म का ज़िक्र करना चाहूँगा क्युकि हिंदु धर्म ही इस दुनिया में ऐसा धर्म हैं जहाँ सबसे ज़्यादा भगवान देवी देवता और मूर्तियो को पूजा जाता हैं| ज़रा सोचिए जब हिंदु धर्म कि सभी किताबो में, वेदो में जो हिंदु धर्म कि नीव हैं ओर जिन्हे विद्वान कहते हैं कि ये अल्लाह के ईश्वर के शब्द हैं, पुराणो में भागवत गीता में उपनिषद् में सभी किताब ये कहा गया हैं कि ईश्वर सिर्फ़ एक हैं उसकि कोई मूर्ति नही उसका कोई आकार नही उसका कोई शरीर नही वो अजन्मा हैं| ओर यजुर्वेद में तो ये तक लिखा हैं के जो लोग अपने हाथ कि बनाई हुई चीज़ो को पूजते हैं जेसे “मूर्ति” वो लोग बहुत ज़्यादा अंधकार में हैं| तो फिर क्यूँ हिंदु मूर्तियो को पूजते हैं ओर उन लोगो कि मूर्तियो को जिन्होने कभी कहा ही नही के मेरी मूर्ति बनाकर मुझे पूजो और उन 33,00,00,000 भगवान में से एक का नाम भी वेदो में नही आया जो ईश्वर के शब्द हैं| अगर ये सब ईश्वर या पूजने के लायक होते तो वेदो में किसी एक का उल्लेख तो मिलता, और ये तक कह दिया यजुर्वेद में वेदव्यास जी ने कि जो लोग असंभूति(पैड, हवा, जानवर, सूर्या, चंद्रमा) को पूजते हैं वो भी अंधकार में हैं तो फिर क्यु लोग पेडो को पूजते हैं| क्यू नदियो को पूजते हैं.. क्यूँ सूरज को पूजते हैं? ?

क्युकि हिंदु ये सोचते हैं कि वेद,पुराण ये सब किताब तो पण्डित और आचार्यो के पढ़ने कि हैं| हमारे समझ नही आति क्युकि ये संस्कृत भाषा में है, इसीलिए वो इस सच्चे ईश्वर को पहचान नही पाते और अपने पूर्वजों कि तरह मूर्तियो को पूजने लगते हैं| और इंसान कि एक कमज़ोरी हैं कि इंसान अपने पूर्वजों के कहने पे चलता है चाहे वो सही हो या ग़लत ओर उस चीज़ के बारे में कुछ सुन भी नही सकता|

भला आप ये सोचिए अगर वो ईश्वर के शब्द हैं तो ईश्वर तो सभी का है सिर्फ़ पण्डित और आचार्यो का थोड़े ही है, तो ईश्वर अगर कुछ संदेश भेजेगा तो वो सभी लोगो के लिए भेजेगा, और पण्डित और आचार्य भी पैसो के चक्कर में आपको वेद के बारे में नही बताते.. क्या आपने कभी सुना हैं फला जगह पर वेदो का प्रवचन हो रहा है| आपने हमेशा सिर्फ़ भागवत गीता और रामायण का प्रवचन सुना होगा कभी वेदो का प्रवचन नही सुना होगा, क्युकि आचार्य लोग और पंडित ये सोचते हैं कि अगर हम वेदो का प्रवचन करेंगे तो लोगो को असली ईश्वर का पता लग जाएगा और मंदिरो में फिर कोई मूर्तियो को पूजने नही आएगा क्युकि वेदो में तो मूर्ति पूजने ओर ईश्वर के सिवा किसी और चीज़ो को पूजने से माना किया हैं अगर कोई लोग नही आएँगे तो उनका वेतन कहाँ से आएगा इसीलिए वो कुछ पैसो के चक्कर में खुद भी ईश्वर से दूर हो जाते हैं और लोगो को भी ईश्वर से दूर कर देते हैं| एक काम करिए आप कभी किसी आचार्य या फिर किसी बड़े पंडित जिन्हे हर चीज़ का पता हो उनसे पु छना के कहीं पे वेदो का प्रवचन क्यूँ नही होता?? देखना वो आपको क्या जवाब देते हैं| जब हिंदु धर्म कि नीव वेद हैं सबसे ज़्यादा प्रवचन वेदो के होने चाहिए!! मैं आपसे दिल से माफी माँगता हूँ अगर आपको किसी भी बात का बुरा लगा हो, मेरा मक़सद किसी का दिल दुखाना नही बल्कि सच्चाई को सबके सामने लाना हैं.. और अगर आपको ये लगता हैं मेने जो कुछ भी लिखा वो सब झूठ है तो आप संस्कृत पढ़िए और उसके बाद वेद पढ़िए सच्चाई आप खुद पता लगा लेंगे कि सच क्या हैं? और झूठ क्या?

जेसा कि मेने आपको सब कुछ बता दिया और सिद्ध कर दिया है हिंदु धार्मिक ग्रंथो से भी.. सिख धार्मिक ग्रंथ से भी और इस्लामिक धार्मिक ग्रंथ"क़ुरान" के ज़रिए भी के अल्लाह(ईश्वर) एक हैं, उसका कोई साझी नही, मान लीजिए कि अल्लाह का कोई साझी होता या फिर ईश्वर एक से ज़्यादा होते या फिर इस दुनिया को दो या उस से ज़्यादा ईश्वर चला रहे होते तो क्या होता?

पता लगता के आज दो ईश्वरो में इस चीज़ को लेकर लड़ाई हो रही है कि एक कह रहा है 12 घंटे कि रात होगी दूसरा कह रहा हैं 14 घंटे कि रात होगी, एक कह रहा है आज बारिश हिन्दुस्तान में होगी एक कह रहा है आज बारिश पाकिस्तान में होगी, एक कह रहा है आज दिन में चाँद निकलेगा एक कह रहा है आज रात में सूरज निकलेगा| अगर ऐसा होता क़ि एक से ज़्यादा ईश्वर होते तो इस दुनिया का निज़ाम बिगड़ जाता, ये दुनिया ठीक तरह से नही चल पाती..

तो दोस्तो ये दुनिया इतनी आराम से चल रही हैं| जहाँ से रोज़ निकलता हैं सूरज वहीं से निकलता हैं| ये इस बात का सबूत है कि ईश्वर एक हैं उसका कोई साझी नही उसके जेसा कोई नही, उसका साथ देने वाला कोई नही, वो किसी का मोहताज(ज़रूरतमंद) नही, उसे किसी के सहारे कि ज़रूरत नही ना तो किसी देवता कि ना किसी इंसान कि ना किसी मज़ार वाले बाबा कि ना पंडित कि ना मौलाना कि ना आचार्य कि ना मुफ्तीयो कि| वो अकेला इस पूरी दुनिया को चलता हैं और इस काम में उसकि कोई मदद नही करता, क्युकि वो महाशक्तिमान है| वोही सुबह के समय रात के पर्दे को फाड़ कर सूरज को निकालता है, वोही सूरज को शाम के समय छिपाता है, और रात के सामय चाँद और सितारो को चमकता हैं, वोही ठंडी और गरम हवाएँ चलाता है, वोही समुंदर में पानी के बड़े बड़े पहाड़ जेसी लहरे बनता है, वोही बड़े बड़े बर्फ के पहाड़ो से बर्फ के पिघलाकर पानी कि शक्ल में नदियो और झीलो तक पहुँचता है ताकि हम मीट्ठा पानी पी सके, वोही पूरी दुनिया के इंसान, जानवर, पक्षी, किड़े मकोडे को खाना प्रदान करता है, वोही है जो मक्खी के थूक से शहद बनता है, वोही है जो गाय और औरतो कि छातियों में दूध पैदा करता है, हम सब को उस अल्लाह(ईश्वर) कि ज़रूरत हैं हर छोटे से छोटे काम के लिए पर उसको किसी कि ज़रूरत नही बड़े से बड़े काम करने के लिए भी, ना तो उसका कोई बाप हैं, ना कोई माँ हैं, ना कोई बेटी, ना कोई बेटा, ना कोई बीवी, वो इन् सब चीज़ो से पवित्र(पाक) है, वो तो अजन्मा है और अमर है, निराकार है, उस को कोई भी इंसान अपनी आँखो से नही देख सकता, ना वो सोता है, ना कभी थकता है, वो अगर उपर देखे तो नीचे का भी उसे सब पता है, वो अगर नीचे देखे तो उपर का उसे सब पता है, दाएँ देखे तो बाएँ का, और बाएँ देखे तो दाएँ का सब पता है, वो इस दुनिया के हर एक इंसान के दिलो के बारे में जानता है, और उसकि जितनी तारीफ़ कि जाए वो कम है|

“ऐसे ही ईश्वर को पूजो मेरे दोस्तो वोही सच्चा ईश्वर हैं बाकि सब झूठ हैं, ओर भगवत गीता में लिखा के जो ऐसे ईश्वर को मानेगा वो अपने हर पाप से मुक्त हो जाएगा”

और इसी ईश्वर ने कहा हैं क मेने ही सब सन्देश्ता(पैग़म्बर) भेजे.. लेकिन आखरी ईश्वरदूत(रसूल) मुहम्मद(स.)से पहले जीतने भी रसूल आए वो सब सिर्फ़ उस समय और उन लोगो के लिए थे| पर आखरी अवतार कल्कि(नरशंस, अहमद, महामद) वो पूरी दुनिया के लिए भेजे गये थे| और ईश्वर कि आखरी किताब से पहले जितनी भी किताबे आई वो सब सिर्फ़ उस समय के लिए थी लेकिन ईश्वर कि आखरी किताब जो ईश्वर के आखरी ईश्वरदूत पे अवतरित हुई वो पूरी दुनिया के लिए है और जब तक ये दुनिया रहेगी तब तक के लिए है| क्युकि ईश्वर ने कहा हैं वो आखरी ईश्वरदूत हैं उसके बाद ना तो कोई ईश्वरदूत(सन्देश्ता,रसूल, पैग़म्बर) आएगा ना कोई नयी किताब आएगी|

और वेदो और पुराणो में वेदव्यास जी लिखते हैं के नरशंस जब आएँगे तो तुम सब लोग उनके कहने पर चलना और जो किताब वो लाएँगे तुम उस किताब के कहने पर चलना क्युकि वो ईश्वर कि तरफ से आखरी संदेश होगा.. वेद में नरशंस

कि कल्कि कि पहचान भी बताई और वो सब पहचान मुहम्मद(स.)से 100% मिलती है| और हिंदु विद्वान ने तो मान भी लिया हैं आखरी अवतार मुहम्मद(स.)ही हैं|

और संग्राम पुराण में आपने पढ़ा के तुलसीदास जी ने शंकर जी के उपदेशो को लिखा है| इन् उपदेशो में लिखा हैं कि "महामद और क़ुरान शरीफ(सुंदर वाणी)" के बिना किसी को मुक्ति नही मिलेगी.. ये मैं नही कह रहा हूँ ये तो शंकर जी अपने पुत्र "षण्ड़मुख" को आने वाले ईश्वर के आखरी अवतार के बारे में बता रहे थे|

और क़ुरान शरीफ मुकम्मल(जिसमे कोई कमी ना हो) किताब है, जिस तरह किसी किताब का नया प्रकाशन होता है, ओर उसमे सब चीज़े ठीक होती हैं और नये प्रकाशन के आते ही पुराने सारे प्रकाशन मान्य नही होते इसी तरह "क़ुरान शरीफ" भी अल्लाह कि आखरी ओर नयी प्रकाशन हैं जिसमे कमी कि या बढ़ोतरी कि कोई गुंजाइश नही है ये किताब मुकम्मल किताब है और इसके आते ही पुरानी सब किताबे मान्य नही हैं| और इस्लाम धर्म मुकम्मल धर्म है जिसमे भी कोई कमी नही हैं ओर किसी चीज़ कि बढ़ोतरी कि नही ज़रूरत है| ईश्वर के आखरी सन्देश्ता ने इस दुनिया से रुखसत होने से पहले कहा था के जो चीज़ मैं तुम लोगो के बीच छोड़े जा रहा हूँ(यानी इस्लाम धर्म और क़ुरान शरीफ) वो मुकम्मल है| इसमे किसी चीज़ कि कमी और ज़्यादती कि ज़रूरत नही| और जो कोई इस को मज़बूती से थामे रखेगा वो कभी ठोकर नही खाएगा(यानी ये तुम्हे जन्नत(स्वर्ग) कि तरफ ले जाएगा जिस से तुम कभी नही भटकोगे अगर इसे मज़बूती से पकड़े रखोगे)|

अब मैं आपसे एक सवाल पु छता हूँ?

क्या आप क़यामत(प्रलय के दिन) पर विश्वास करते हैं????

क़यामत का मतलब है- जब पूरी दुनिया ख़त्म हो जाएगी, इस धरती पर एक भी इंसान एक भी जीव नही बचेगा, सब के सब मार जाएँगे, और मौत तो ऐसी चीज़ हैं जिसका ना कोई धर्म, ना कोई इंसान, ना कोई रसूल, ना कोई देवता, ना कोई पंडित, ना कोई मौलाना कोई माना नही कर सकता| और जब मौत के बाद हम सब ईश्वर के पास जाएँगे और वो हमसे इस ज़िंदगी का हिसाब लेगा, के मेने तुम्हे ये ज़िंदगी दी तुमने इसमे मेरी कितनी बातें मानी, मेरी कितनी इबादत करी.. और इस ज़िंदगी में क्या क्या किया??

अगर आप ये मानते हैं कि मरने के बाद ईश्वर हमसे इस ज़िंदगी का कोई हिसाब नही लेगा या ईश्वर हमसे कोई सवाल नही पुछेगा.. तो ये सोचिए उन इंसान में जो पूरी ज़िंदगी ईश्वर कि इबादत करते हैं, सच बोलते हैं, पूरी ज़िंदगी उसी के कहने पे गुज़ारते हैं, हमेशा दूसरो का भला करते हैं और अच्छे काम करते हैं| और वो इंसान जो चोरी करते हैं, झूठ

बोलते हैं, बलात्कार करते हैं, बे-गुनाह और मासूम का खून करते हैं, ईश्वर कि इबादत नही करते, ईश्वर को नही मानते, सबका दिल दुखाते हैं या और भी बहुत से बुरे काम करते हैं| इन् दोनो तरह के लोगो में फ़र्क क्या रह जाएगा? उन्हे कुछ तो इनाम मिलना चाहिए जो पूरी ज़िंदगी ईश्वर के संदेश के मुताबिक जिए और मार गये|

जी हाँ!!! ये इनाम उन्हे ईश्वर खुद देगा इस ज़िंदगी का हिसाब लेने के बाद और उन लोगो को सज़ा भी देगा जो लोग ग़लत काम करते हैं उनका भी हिसाब होगा|

और अगर आप ये सोचते हैं कि "हाँ" मरने के बाद ईश्वर हमसे हिसाब लेगा इस ज़िंदगी का तो सोचिए-

अगर उस ईश्वर ने ये कह दिया के हमने अपनी किताब उतारी और बहुत से पैगम्बरो(सनेष्टा,अवतार) को तुम्हे सही राह पर लाने के लिए भेजा और हर सन्देश्ता(पैग़म्बर) ने यही कहा के उस एक ईश्वर कि पूजा करो जो मेरा और तुम्हारा ईश्वर है, और हर किताब में चाहे वो वेद हो, चाहे पुराण हो, चाहे गुरु ग्रंथ साहिब हो चाहे भागवत गीता हो, चाहे उपनिषद् हो, चाहे बाइबल हो हर किताब में यही लिखा के एक ईश्वर को पूजो, जिसकि कोई मूर्ति नही,कोई फोटो नही वो निराकार हैं, वो अजन्मा हैं उसके माँ,बाप औलाद,बीवी कुछ नही हैं जो कभी मारा नही जिसे कभी किसी ने देखा नही ऐसे ईश्वर कि पूजा करो| मगर तुम लोगो ने उन्ही को अपना ईश्वर बना लिया जो तुम्हे सही राह दिखाते थे और उनकि मूर्ति बनाकर उनही को पूजने लगे| जो तुम्हे इन् सब पापो से रोकने आए थे| जब कि किसी भी अवतार ने या किसी भी सन्देश्ता या रसूल ने ये नही कहा के मैं ईश्वर हूँ और मेरी मूर्ति बनाकर पूजा करो|

अगर ईश्वर मे हमसे ये सवाल पूछ लिया के जो मेने अपना आखरी संदेश क़ुरान शरीफ और आखरी सन्देश्ता(पैग़म्बर) भेजा था के वो तुम्हे मेरे करीब लाए तुम्हे सीधी राह दिखाए| उस आखरी और मुकम्मल धर्म(इस्लाम) और मुहम्मद (स.) और क़ुरान शरीफ के कहने पे चले या नही? जिसके बारे में वेदो में भी लिखा था ,पुराणो में भी, गीता में भी, उपनिषद् में भी और बाइबल में भी लिखा था के जब आखरी अवतार आए तो उसके कहने पर चलना तो तुम्हे मुक्ति मिलेगी और तुम स्वर्ग में जाओगे…

तो बस एक पल के लिए सोचिए क्या हमारे पास ईश्वर के इन् सब सवालो का कुछ जवाब होगा??? ज़रा एक बार अपने दिल से के हम जो कर रहे हैं?? उस से हमारा ईश्वर जिसने हमे ये खूबसूरत ज़िंदगी दी क्या वो हमसे खुश होगा??

ईश्वर ने अपने आखरी संदेश(क़ुरान शरीफ) में लिखा हैं कि "ईश्वर "शिर्क" को कभी माफ़ नही करेंगा और सब गुनाहो को माफ़ कर देगा क्युकि वो बड़ा करुणामय और दयावान है"

"शिर्क" का मतलब होता हैं एक से ज़्यादा खुदा को पूजना, किसी को ईश्वर का साझी बनाना, अपने हाथ से बनाई हुई और प्रकर्तिक चीज़ो को पूजना, ये सब शिर्क कहलाते हैं"

तो बस इंसान “शिर्क” गुनाह ना करे क्यूकि वो कभी माफ़ नही होंगे और सब गुनाह ईश्वर चाहे तो माफ़ कर देगा.. लेकिन अगर कोई सच्चे दिल से ईश्वर से माफी माँग ले और आइन्दा से शिर्क गुनाह ना करने का वादा करले तो उसके पिछले सारे गुनाह ईश्वर माफ़ कर देगा चाहे वो “शिर्क” भी हो|

अब आप एक बात और बताइए| जिस आखरी अवतार(मुहम्मद) के बारे में वेदो में भी लिखा है पुराणो में भी लिखा है,गीता में भी लिखा है, बाइबल में भी लिखा है और उसके आखरी संदेश क़ुरान शरीफ में भी लिखा है| जब हर किताब में लिखा हैं तो हमे मुहम्मद(स.) में यकिन रखना चाहिए या नही?? और उस ईश्वर के आखरी संदेश”क़ुरान शरीफ” में यकिन रखना और उसके मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारनी चाहिए या नही??

मेरा जवाब है “हाँ” क्युकि क़ुरान शरीफ में लिखा हैं जो बिल्कुल सच हैं… और यजुर्वेद और संग्राम पुराण और गीता में लिखा हैं बिना उसके किसी को मुक्ति नही मिलेगी, और एक ईश्वर में मानना, आखरी सन्देश्ता पे यकिन रखना के वो आखरी है, और ईश्वर का भेजा हुए हैं उसके बाद कोई सन्देश्ता नही आएगा| और क़ुरान और उस आखरी सन्देश्ता के मुताबिक ज़िंदगी गुराने को हम कहते हैं-

“इस्लाम”

जेसा कि मेने कहा था कि इंसान को ईश्वर ने इतनी समझ नही दी कि वो खुद सही और ग़लत का फ़ैसला कर सके| पर ईश्वर ने इतनी समझ तो दी है कि जब उसके सामने सबूत हो के कौनसा रास्ता सही हैं और कौनसा ग़लत? तो वो ये फ़ैसला तो कर सकता है वो ग़लत रास्ते पर चल रहा हैं या सही रास्ते पर?

मैं एक मुस्लिम होने के नाते हर धर्म कि इज़्ज़त कर करता हूँ.. क्युकि क़ुरान शरीफ में लिखा हैं कि-

“जो दूसरे मज़हब हैं उनकि इज़्ज़त करो और उनके खुदाओ को जिन्हे वो पूजते हैं उनको कभी गाली मत दो क्युकि वो उनके दिलो में कुछ इज़्ज़त रखते हैं, कहीं ऐसा ना हो के तुम उनके खुदाओ को गाली दो और वो गुस्से में आके अल्लाह को गाली देने लगे”|

अगर इस किताब को पढ़ते हुए कहीं भी आपका दिल दुखा हो या किसी बात से आपके दिल को तकलीफ़ पहुँची हो मैं आपसे दोबारा दिल से माफी माँगता हूँ.. मेरा मक़सद आपके दिल को दुखाना नही बल्कि सही राह दिखना था|

वेदो में लिखा हैं के जब वो आखरी ऋषि आएगा वो जिस धर्म को लेकर आएगा वो आखरी होगा और तुम लोग उसी के पीछे चलना और उसी के धर्म को अपनाना| क्युकि वो आखरी और सच्चा धर्म होगा और जो उनके बिना किसी को मुक्ति नही मिलेगी|

तो मैं आपको दावत (न्योता) देता हूँ “इस्लाम” धर्म क़ुबूल करने की-

इस्लाम धर्म क़ुबूल करने के लिए आपको वादा करना होगा कि आज के बाद किसी मूर्ति को नही पूज़ेंगे और सिर्फ़ उसी ईश्वर के सामने हाथ जोड़ेंगे और सिर झुकाएंगे जिस सच्चे ईश्वर का उल्लेख वेद में हैं, क़ुरान में हैं, और जिस ईश्वर कि इबादत करने के लिए आखरी ईश्वरदूत(रसूल) मुहम्मद(स.)ने कहा है| और ये कलिमा पढ़ना होगा और गवाही देनी होगी-

"अश्-हदू अन-ला-इलहा इल्लालाहू वा-अश्-हदू अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व-रसूलुहु"

अर्थ: "मैं गवाही देता/देती हूँ के अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नही और मुहम्मद(स.)अल्लाह के बंदे और रसूल हैं"|

मुहम्मद(स.)ने कहा था कि मैं आखरी ईश्वरदूत हूँ मेरे बाद और कोई ईश्वरदूतनही आएगा| और मैं पूरी इंसानियत के लिए आया हूँ ना कि सिर्फ़ मुस्लिम और अरब के लोगो के लिए.. तो उनका ये आखरी संदेश पूरी इंसानियत तक पहुँचे, और उन्होने ये कहा था के जिन लोगो तक ये संदेश पहुँच गया है अब ये उनकि ज़िम्मेदारी है कि वो उन तक पहुँचाए जिन तक ये संदेश नही पहुँचा| मेने अपना काम कर दिया है आप तक ये संदेश पहुँचा कर, अब आपकि ज़िम्मेदारी हैं कि ये सच्चे ईश्वर का आखरी संदेश दूसरो तक पहुँचाए|

और इस्लाम क़ुबूल करना या ना करना तो आपके हाथ में इसके लिए आपसे कोई ज़बरदस्ती नही करेगा, क्युकि ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करवाना भी गुनाह हैं|

लेकिन अगर आप स्वर्ग(जन्नत) में जाने के तलबगार हैं तो आप ज़रूर इस्लाम क़ुबूल कर लेंगे और बेशक आप अपने माँ,बाप,भाई, बहन,बेटा,बेटी,पति,पत्नी,पड़ोसी सब को जन्नत में देखना चाहते हैं उन्हे भी इस सच्चे ईश्वर कि तरफ बुलाए| जो अल्लाह कि तरफ एक कदम क़रीब आता है, अल्लाह उसकि तरफ 10 कदम करीब आता है| और अगर कोई उसकि तरफ चल कर आता है तो अल्लाह उसकि तरफ भाग कर आता है| बेशक अल्लाह बहुत महरबान और हिदायत देने वाला हैं||

अल्लाह मुझे और आप सभी को हिदायत(सही रास्ते पे चलने) कि तौफ़ीक़ आता फरमाये|

आपका सवाल

आपका यह सवाल हो सकता हैं के जब सब धर्मो कि किताबो में एक ईश्वर और मुहम्मद(स.)को आखरी पैग़म्बर बताया गया हैं तो इस्लाम ही क्यू क़ुबूल करें??

इसका जवाब मैं एक बहुत जानी मानी हस्ती "हज़रत मौलाना कलीम सिद्दिक़ी" कि किताब "आपकी अमानत" में से नकल कर रहा हूँ|

इसका जवाब आज कि दुनिया के हिसाब से बहुत आसान है-

हमारे देश कि एक सांसद है| यहाँ का एक संविधान है| यहाँ जीतने भी प्रधान मंत्री आए वो सब हिन्दुस्तान के वास्तविक प्रधान मंत्री थे| जवाहर लाल नेहरू, शास्त्री जी, इंदिरा गाँधी, राजीव गाँधी इत्यादि| देश कि ज़रूरत और सामय के अनुकूल जो क़ानून उन्होने पास किए वो सब हिन्दुस्तान के थे मगर अब जो वर्तमान प्रधान मंत्री हैं उनके सांसद और सरकार जो भी क़ानून में बदलाव या नया क़ानून पास करेगी उस से पुराना क़ानून समाप्त हो जाएगा| और हर हिन्दुस्तानी के लिए अनिवार्या होगा के उस क़ानून का पालन करे| अगर अब कोई यह कहेगा कि इंदिरा गाँधी से तो प्रधान मंत्री थी तो मैं उनका ही क़ानून मानूँगा, इस नये मंत्री के क़ानून को मैं नही मानता और ना उसके द्वारा लगाए गये "टैक्स" दूँगा तो ऐसे आदमी को हर कोई हिन्दुस्तान विरोधी कहेगा और वो सरकार कि नज़र में मुजरिम होगा| और उसे सज़ा दी जाएगी| इसी तरह सारे धर्म और धार्मिक ग्रंथ अपने सामय में आए और सब सत्य कि शिक्षा देते थे| इसलिए अब सारे संदेशताओ(रासूलो) और धार्मिक ग्रंथो को सच मानते हुए भी आखरी रसूल मुहम्मद(स.) पे ईमान रखना और इस्लाम क़ुबूल करना हर एक इंसान के लिए अनिवार्य है|

और अगर कोई ईमान के बिना मर गया उसे सज़ा मिलेगी और हमेशा के लिए नर्क(जहन्नुम) कि आग में जलना पड़ेगा||

==

अगर आप इस्लाम से संबंधित या फिर इस किताब में जो लिखा हैं उस से संबंधित कोई भी जानकारी चाहते हैं तो हमे संपर्क कर सकते हैं|

मैल करें-

khanabdullah874@gmail.com